२०६७, वैशाख - १

# सर्वोच्च अदालत बुलेटिन

## पाक्षिक प्रकाशन

वर्ष १९, अङ्क १ | २०६७, वैशाख १–१५ | पूर्णाङ्क ४२७

प्रकाशक

# सर्वोच्च अदालत

## रामशाहपथ, काठमाडौं

फोन नं. ४२५०७४२, ४२६२३९७, ४२६२३९८, ४२६२८०१, ४२५८१२२ Ext.२६५१ (सम्पादन), २६५० (छापाखाना), २१०९ (विक्री)
फ्याक्स: ४२६२८७८, पो.ब.नं. २०४३८
**Email:** infor@supremecourt.gov.np, Web: www.supremecourt.gov.np



## सम्पादन समिति

| | |
|---|---|
| माननीय न्यायाधीश श्री प्रकाश वस्ती | - अध्यक्ष |
| सहरजिष्ट्रार श्री विपुल न्यौपाने | - सदस्य |
| सम्पादक श्री तेजेन्द्रप्रसाद शर्मा सापकोटा | - सचिव |

**सम्पादन शाखामा कार्यरत कर्मचारीहरू**

कम्प्युटर अधिकृत श्री शम्भुप्रसाद आचार्य
मुद्रण अधिकृत श्री उत्सव कान्छा महर्जन
ना.सु.श्री कृष्णवहादुर गुरुङ
ना.सु.श्री सम्झना सिम्खडा पुडासैनी
डि. श्री सरस्वती खड्का
कार्यालय सहयोगी श्री कृष्णवहादुर श्रेष्ठ


**२०६७ वैशाख १ देखि १५ सम्म विभिन्न इजलासहरूबाट सम्पादन शाखामा प्राप्त निर्णय / आदेशहरू**

| | |
|---|---|
| विशेष इजलास | १ |
| पूर्ण इजलास | ५ |
| संयुक्त  इजलास | ५ |
| इजलास नं. १ | १३ |
| इजलास नं. २ | २५ |
| इजलास नं. ३ | ७ |
| इजलास नं. ४ | ८ |
| इजलास नं. ५ | २ |
| इजलास न.. ६ | ४ |
| इजलास नं. ७ | २ |

| | |
|---|---|
| इजलास नं. ८ | १६ |
| **जम्मा** | **९८** |

**यो समाचार बुलेटिन हो । निर्णय संक्षेपीकरण गर्दा इजलासले नै प्रयोग गरेका शब्द यहाँ नपरेका पनि हुन सक्दछन् । यहाँ उल्लिखित निर्णयहरूको नक्कल लिन सकिनेछ ।**

**२०६७ साल वैशाख १ देखि १५ गतेसम्म मुद्दाको लगत फछ्र्यौट विवरण**

| क्र.सं. | विषयगत मुद्दा | | लगत | | | फछ्र्यौट संख्या | बाँकी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | | जिम्मेवारी सरेको | यस वर्ष परेको | जम्मा | | |
| 1= | पुनरावेदनपत्र | देवानी पुनरावेदन | ३६५२ | ८९३ | ४५४५ | १५१४ | ३०३१ |
| 2= | | फौजदारी पुनरावेदन | २३६८ | ६५३ | ३०२१ | ८९५ | २१२६ |
| 3= | | देवानी पूर्ण इजलास | ६७ | १८ | ८५ | ६८ | १७ |
| 4= | | फौजदारी पूर्ण इजलास | ३६ | ७ | ४३ | ४० | ३ |
| 5= | रिट निवेदन | वन्दीप्रत्यक्षीकरण | ३ | ५८ | ६१ | ५१ | १० |
| 6= | | साधारण रिट | २६०१ | १००५ | ३६०६ | ११४४ | २४६२ |
| 7= | | पूर्ण रिट | १० | ८ | १८ | ९ | ९ |
| 8= | | विशेष रिट | ६४ | ४८ | ११२ | ६२ | ५० |
| 9= | साधक | साधक | ८७ | ६३ | १५० | ७१ | ७९ |
| 10= | दोहोर्‍याई पाऊँ | दोहोर्‍याई पाऊँ देवानी | १०९४ | ७१७ | १८११ | ९७३ | ८३८ |
| 11= | | दोहोर्‍याई पाऊँ फौजदारी | ३६४ | २६४ | ६२८ | ३६३ | २६५ |
| 12= | पुनरावलोकन | पुनरावलोकनको निवेदन | ३२७ | ३७० | ६९७ | २०१ | ४९६ |
| 13= | अनुमति | पुनराबेदनको अनुमति निवेदन | १०५ | २८ | १३३ | ४३ | ९० |
| 14= | विविध | विविध | ७२ | १८ | ९० | ३० | ६० |
| 15= | निवेदन प्रतिवेदन | निवेदन | १० | २६५ | २७५ | १७२ | १०३ |
| 16= | | प्रतिवेदन | १४ | १३९ | १५३ | ९३ | ६० |
| | | जम्मा | १०८७४ | ४५५४ | १५४२८ | ५७२९ | ९६९९ |

**२०६७ साल वैशाख १ देखि १५ गतेसम्मको मुद्दातर्फको संख्यात्मक विवरण**

| | | | |
|---|---|---|---|
| (क) कार्यदिन | १२ | (ङ) आदेश संख्या | ३८३ |
| (ख) पेशी चढेका मुद्दा संख्या | २१०४ | (च) फछ्र्यौट संख्या | ३१५ |
| (ग) कानून व्यवसायीद्वारा स्थगित भएका मुद्दा संख्या | ६६८ | (छ) हेर्न नभ्याएका | ५४४ |
| (घ) हेर्न नमिल्ने मुद्दा संख्या | १६२ | (ज) नि.सु. संख्या | ३२ |

**समूहकृत (अभियान) मुद्दाहरूको २०६७ वैशाख १५ गतेसम्मको स्थिति**

| समूह | कूल मुद्दा | फैसला | | | हेर्दाहेर्दै | नि.सु. | मेलमिलापमा गएको | बाँकी |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | | अघिल्लो अवधिसम्म | यस अवधिसम्म | जम्मा | | | | |
| फौजदारी | ३६५ | १८४ | ७ | १९१ | १३४ | ४ | | १७४ |
| देवानी | ११८१ | ८७९ | २१ | ९०० | १ | ७ | ३४ | २८१ |
| रिट/वाणिज्य | ३३६ | २६४ | २१ | २८५ | | २ | १ | ५१ |

**उद्धरणः** *सअ* बुलेटिन २०६... ... १ वा २ पूर्णाङ्क .... , पृष्ठ ....
(साल) (महिना)

**उदाहरणार्थः** *सअ* बुलेटिन, २०६७, वैशाख - १, पूर्णाङ्क ४२७, पृष्ठ ११

का.जि.द.नं. ३९।०४९।०५०

**नेपाल कानून पत्रिका तथा सर्वोच्च अदालत बुलेटिन**
**अब ह**

**www**

- यो वेभसाइट ख
तथा त्यसको त
गर्नुहोस् ।
- २०६६ साल वैशाखदेखिका यी पत्रिकामा समाविष्ट निर्णयहरू पढन र अर्को निर्णय नभएसम्म निःशुल्क डाउनलोड गर्न सकिनेछ ।

**नेपाल कानून आयोगको वेभसाइटमा संविधान समेत हालसम्म २५० जति ऐनहरू र तीमध्ये १०० वटा जति ऐनको अंग्रेजी अनुवाद निःशुल्क पढन र डाउनलोड गर्न सकिनेछ ।**

ठेगाना
**www.lawcommission .gov.np**

मूल्य
रु.१५।-

मुद्रकः
सर्वोच्च अदालत, छापाखाना, रामशाहपथ, काठमाडौं ।

# विषय सूची


| क्र.सं | विषय | पक्ष / विपक्ष | पृष्ठ |
|---|---|---|---|
| **विशेष इजलास** | | | १-३ |
| 1: | उत्प्रेषण | भरतकुमार प्रसाई वि. मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय | |
| 2: | उत्प्रेषण | अच्यूतप्रसाद खरेल वि. मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय | |
| 3: | उत्प्रेषण | नरेशकुमार प्रधान वि. मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय | |
| 4: | उत्प्रेषण | गोवर्दनलाल नकर्मी वि. मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय | |
| 5: | उत्प्रेषण | लक्ष्मीप्रसाद पोखरेल वि. नेपाल कानून व्यवसायी परिषद् समेत | |
| **पूर्ण इजलास** | | | ३ |
| 6: | मोही कायम | विष्णुदेव राउत कुर्मी वि. गुठी संस्थान कार्यालय जनकपुर | |
| **संयुक्त इजलास** | | | ४-६ |
| 7: | अंश चलन | शुकलक्ष्मी लामा समेत वि. सोमबहादुर लामा | |
| 8: | भ्रष्टाचार | सनतकुमार रेग्मी वि. नेपाल सरकार | |
| 9: | ठगी | छत्रमान श्रेष्ठ वि.दीपक मास्के समेत | |
| 10: | जीउ मास्ने बेच्ने | कमली यादव वि. नेपाल सरकार समेत | |
| 11: | भ्रष्टाचार | नेपाल सरकार वि. बसन्तकुमार कुँवर समेत | |
| 12: | डाँका | नेपाल सरकार वि. पदम मानन्धर समेत | |
| 13: | कर्तव्य ज्यान | क्षेत्रबहादुर शाही वि. नेपाल सरकार | |
| 14: | लागू औषध | प्रदीपकुमार शाह वि. नेपाल सरकार समेत | |
| 15: | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | केशव अर्याल वि. काठमाडौं जिल्ला अदालत | |
| **इजलास नं. १** | | | ६-९ |
| 16: | सवारी ज्यान | खुमबहादुर ढुङ्गाना वि.नेपाल सरकार | |
| 17: | यातना तथा क्षतिपूर्ति | जिल्ला प्रहरी कार्यालय बाग्लुङ्ग वि. राजेन्द्रबहादुर के.सी | |
| 18: | अंश दर्ता | रामप्रसाद महतो चाई समेत वि. रामलखन महतो चाई | |
| 19: | मोल बिगो भराई पाऊँ | पदमबहादुर महत वि. भैरवनाथ गुठी व्यवस्थापन समिति जुम्ला | |
| 20: | बाली विगो | मगलु बरै वि. जगमोहन बरै | |
| 21: | लिखत बदर | लाल महमद धुनिया वि. रामदेव पण्डित कुम्हार | |
| 22: | उत्प्रेषण परमादेश | प्रदीप शिल्पकार समेत वि. पुनरावेदन अदालत पाटन समेत | |
| 23: | जालसाजी | जोगेन्द्र यादव समेत वि. मनरुपीयादेवी यादव समेत | |
| 24: | अंश | जोगेन्द्र यादव समेत वि. मनरुपीयादेवी यादव समेत | |
| 25: | उत्प्रेषण परमादेश | राजेन्द्र खनाल वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को सचिवालय समेत | |
| **इजलास नं. २** | | | ९-१० |
| 26: | उत्प्रेषण | सुजित मुन्दुल वि. श्रम अदालत | |
| 27: | उत्प्रेषण प्रतिषेध | माधवप्रसाद भण्डारी वि. जलश्रोत मन्त्रालय समेत | |
| 28: | उत्प्रेषण | गगनबहादुर कार्की वि. गृह मन्त्रालय समेत | |
| 29: | बाली विगो भराइपाऊँ | गंगादत्त जोशी वि. शान्तिदेवी खत्री समेत | |
| 30: | कर्तव्य ज्यान | नेपाल सरकार वि. बालकृष्ण ढुङेल समेत | |
| 31: | जग्गा दर्ता | देवी बरै वि. रामानन्द राउत बरै समेत | |
| **इजलास नं. ४** | | | ११ |
| 32: | उत्प्रेषण | देवीचरणप्रसाद केवट वि. जिल्ला शिक्षा कार्यालय रुपन्देही समेत | |
| **इजलास नं. ५** | | | ११-१२ |
| 33: | बन्दी प्रत्यक्षीकरण | रवि दाहाल वि. राजु अधिकारी समेत | |
| 34: | उत्प्रेषण परमादेश | खेमजंग पाण्डे वि. नेपाल वायुसेवा निगम समेत | |
| 35: | चोरी | शेष रईस आलम वि. नेपाल सरकार | |
| 36: | उत्प्रेषण | महेशकुमार थपलिया वि. नेपाल सरकार | |
| **इजलास नं. ६** | | | १३-१४ |
| 37: | उत्प्रेषण | सुशील महर्जन वि. सानुमैया महर्जन समेत | |
| 38: | उत्प्रेषण परमादेश | गजेन्द्र विक्रम राणा वि. क्षेत्रीय प्रहरी कार्यालय सुर्खेत समेत | |

| | | |
|---|---|---|
| 39= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | प्रल्हाद (चौधरी) थारु वि. जिल्ला प्रहरी कार्यालय सिरहा समेत |
| 40= | उत्प्रेषण | खगराज आचार्य वि. पुनरावेदन अदालत बुटवल समेत |
| 41= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | सोनाम तामाङ्ग समेत वि. काठमाडौं उपत्यका नगर विकास समिति समेत |
| 42= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | आनन्दप्रसाद श्रेष्ठ वि. पुनरावेदन अदालत हेटौंडा समेत |
| 43= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | आनन्दप्रसाद श्रेष्ठ वि. पुनरावेदन अदालत हेटौंडा समेत |
| **इजलास नं. ७** | | १५-१९ |
| 44= | बाटो हक कायम | जलकृष्ण श्रेष्ठ समेत वि. तीर्थमाया श्रेष्ठ |
| 45= | निषेधाज्ञा | प्रेमकुमार श्रेष्ठ वि. जिल्ला प्रशासन कार्यालय सप्तरी |
| 46= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | प्रेमकुमार श्रेष्ठ वि. मालपोत कार्यालय सप्तरी समेत |
| 47= | दायित्व पूरा गराई पाऊँ | रतनलाल अग्रवाल वि. नेपाल बिटुमिन तथा व्यारेल उद्योग |
| 48= | दर्ता बदर | हरिनारायण मिश्र वि.रामसोभित मण्डल |
| 49= | जग्गा खिचोला | महावीर साह वि. गुदी देवी सरदार्नी |
| 50= | हक कायम | मालपोत कार्यालय धनकुटा वि. प्रेमबहादुर कुँवर |
| 51= | मोही लगत कट्टा | सुरेशकुमार चौधरी वि. शनिलाल माझी |
| 52= | फैसला बदर | राम खेलावन खत्वे वि.कृष्णकला खंग |
| 53= | अंश दपोट | राम खेलावन खत्वे वि. रामजीवन खंग समेत |
| 54= | स्रेस्ता बदर दर्ता बदर | रामस्वरुप चौधरी वि. केवल महतो |
| 55= | निर्णय बदर | सूर्यकुमार विमली वि. गुठी संस्थान के.का. समेत |
| 56= | छूट जग्गा दर्ता | मालपोत कार्यालय काभ्रेपलाञ्चोक वि. कर्णबहादुर श्रेष्ठ |
| 57= | उत्प्रेषण | रामानन्द छिपी वि. पुनरावेदन अदालत बुटवल समेत |

| | | |
|---|---|---|
| 58= | परमादेश | गीतादेवी मरोडिया वि. राष्ट्रिय वाणिज्य बैंक के.का. समेत |
| 59= | उत्प्रेषण | कान्छाभाई सुवाल वि. कृष्णबहादुर सुवाल समेत |
| **इजलास नं. ९** | | १९-२० |
| 60= | उत्प्रेषण परमादेश | जगतबहादुर डंगोल वि. शिक्षक सेवा आयोग भक्तपुर समेत |
| 61= | उत्प्रेषण परमादेश | काजीमान लामा वि. पुनरावेदन अदालत पोखरा समेत |
| 62= | अंश चलन | सुरेन्द्र चौधरी वि. भिखम दास चौधरी समेत |
| **इजलास नं. १०** | | २१-२४ |
| 63= | करार भंग क्षतिपूर्ति | महेश हमाल वि. जीवनकुमार समेत |
| 64= | हक कायम | नानीछोरी कपाली समेत वि. मदनेश्वरानन्द बैद्य समेत |
| 65= | अंश चलन | सवमुद्दिन मिया समेत वि. सफिद रहमान मिया समेत |
| 66= | बाटो कायम | सीरकुमारी गुरुङ वि. मीनबहादुर खत्री समेत |
| 67= | उत्प्रेषणयुक्त परमादेश | राजेश गौतम वि. प्रशासकीय अदालत समेत |
| 68= | उत्प्रेषण परमादेश | मनोज पौडेल वि. शिक्षा तथा खेलकुद मन्त्रालय समेत |
| 69= | उत्प्रेषण | शिवमंगलप्रसाद शाह तेली वि. पुनरावेदन अदालत हेटौंडा समेत |
| 70= | उत्प्रेषण | डा. हरिश्चन्द्र उप्रेती वि. चिकित्सा विज्ञान राष्ट्रिय प्रतिष्ठान बीर अस्पताल समेत |
| 71= | उत्पेषण | दिलकृष्ण श्रेष्ठ वि.स्वास्थ्य तथा जनसंख्या मन्त्रालय समेत |
| 72= | भ्रष्टाचार | अम्बिकाप्रसाद उपाध्याय वि. नेपाल सरकार समेत |
| **एकल इजलास** | | २४ |
| 73= | उत्प्रेषण परमादेश | सुन्तली तामाङ वि. आपूर्ति मन्त्रालय समेत |
| 74= | उत्प्रेषण | बसन्तबहादुर श्रेष्ठ समेत वि. पुनरावेदन अदालत पाटन समेत |

## विशेष इजलास

१

**मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला, मा.न्या.श्री मोहनप्रकाश सिटौला र मा.न्या. श्री अवधेशकुमार यादव**, २०६४ सालको WS-००३२, उत्प्रेषण, *शक्तिकुमार वेगानी वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत*

संवैधानिक एवं कानूनी व्यवस्थाबमोजिम तोकिएको जिम्मेवारी निर्वाह गर्नुपर्ने कर्तव्य भएका निकायले आफूलाई तोकिदिएको जिम्मेवारी पूरा नगरी आफूकहाँ विचाराधीन विषय लामो समयसम्म अनिर्णित अवस्थामा राख्नु निश्चय नै सुहाउँदो विषय मान्न नमिल्ने ।

मौलिक हकउपर अनुचित वन्देज लगाइएको वा अन्य कुनै कारणले कुनै कानून संविधानसँग वाझिएको अवस्थामा नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ को धारा १०७(१) को आधारमा यस अदालतले आफ्नो असाधारण अधिकारको प्रयोग गर्नसक्ने अवस्था देखिन्छ । गृह मन्त्रालयबाट जारी गरिएको परिपत्रले संविधानको धारा १०७(१) मा प्रयुक्त उक्त कानून भन्ने पदावलीको स्थान ग्रहण गर्नसक्ने अवस्था देखिँदैन । यस प्रकार यी निवेदकले आफ्नो मौलिक हकमा वन्देज लगाएको भनी आफ्ना विरुद्धको परिपत्रको अस्तित्व देखाएको अवस्थामा समेत कानूनको हैसियत प्राप्त गर्न नसक्ने परिपत्र वा सोको व्यवस्था अमान्य र वदर (Ultra Virus) हुन सक्ने संवैधानिक व्यवस्था रहेको पाइदैन । परिपत्र भएको भए भन्ने आधारमा अस्तित्व मै नरहेको निर्णय वा परिपत्रलाई न्यायिक पुनरावलोकन (Judicial Review) को सिद्धान्तको आधारमा यस अदालतले उक्त धाराको संवैधानिक प्रावधान आकर्षित गरी अमान्य वा वदर घोषित गर्नुपर्ने अवस्था देखिदैन । अस्तित्वमै नरहेको निवेदन व्यहोरामा उल्लेख भएको तर्कसम्मको आधारमा काल्पनिक विषयवस्तुको रुपमा रहेको औचित्यहीन कुरालाई रिट क्षेत्राधिकारको प्रयोगको आधारमा यस अदालतबाट थप विवेचना गरिरहनु नपर्ने ।

इजलास अधिकृतः पुनाराम खनाल
कम्प्युटरः सीता गुरुङ
इति संवत् २०६६ साल पुस ९ गते रोज ५ शुभम् ।

## पूर्ण इजलास

१

**मा.न्या.श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ, मा.न्या. श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव**, फौ.पु.इ.नं.CF-००१४ र ००१५, कर्तव्य ज्यान, *भीमकुमार राई वि. नेपाल सरकार, केमरबहादुर राई समेत वि. नेपाल सरकार*

पुनरावदेन गर्ने अधिकार प्रयोग गर्नु वा नगर्नु निजहरूको अधिकारको विषय भए पनि कानूनले उपलब्ध गराएको सो अधिकारको कानूनबमोजिमको प्रयोगको सम्बन्धमा नियन्त्रण गर्न वा संकुचन लगाउन हुँदैन । कानूनबमोजिम न्यायिक काम गर्ने दायित्व भएका कुनै पनि निकायले यस्तो अधिकारको प्रयोगमा व्यवधान उत्पन्न नगरी सहज रुपमा प्रयोग गर्न दिनुपर्छ । सो अधिकारमा नियन्त्रण र संकुचनको अवस्था सिर्जना गर्नु भनेको कानूनले दिएको अधिकारको उपभोगमाथिको अतिक्रमण भै न्यायसंगत हुन नसक्ने ।

मनसायपूर्वक बाटो ढुकी मृतकउपर धारिलो हतियारले काटी मारेको अवस्था देखिँदा सजायमा कमी गर्नुपर्ने अवस्था विद्यमान नहुँदा सजायमा कमी हुनुपर्ने जिकीरसँग सहमत हुन नसकिने ।

मृतकउपर हतियार प्रयोग नगरेको भन्ने मात्र कारण आपराधिक दायित्वबाट उन्मुक्ति पाउने आधार बन्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृतः दीपककुमार दाहाल
इति संवत् २०६६ साल माघ १४ गते रोज ५ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर, मा.न्या. श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती**, २०६५ सालको दे.पु.इ.नं.-DF-०००१, मोही प्रमाणपत्र नामसारी, *झवर यादवको मु.स.गर्ने फुलोवती यादव वि. जगदीशप्रसाद दास*

जग्गाधनीले नै मोहीको देहान्त भएपछि निजका पत्नी तथा छोराहरूसमेतका विभिन्न हकवाला रहेको अवस्थामा कुनै एक व्यक्तिलाई मोही मान्दै वालीको दावी साधिकार निकायमा विधिसम्मत तरिकाले गर्दछ भने यसलाई पत्याउने क्रियाको रुपमा ग्रहण गर्नुपर्ने । जिल्ला अदालत साधिकार निकाय हो । कानूनले बाली मुद्दा हेर्ने अधिकार अदालतलाई दिएको छ र अदालत प्रवेशको माध्यम फिराद लिएर अदालत प्रवेश गरेको अवस्थालाई मोही पत्याएको मान्नुपर्ने ।

पैत्रिक सम्पत्तिसरह हकवाला भएको कारणबाट मात्र स्वतः मोही हक नामसारी हुन नसक्ने कानूनी व्यवस्थाबाट मोही हक प्राप्त गर्नको लागि कानूनद्वारा निर्धारित भएबमोजिम मोहीको दायित्व निर्वाह गर्नुपर्ने कुरा स्वाभाविक नै हुन्छ । मोहीमा कमाइआएको जग्गामा सालबसाली खेती गर्नु, जग्गाको भोतिक स्वरुप नबिगार्नु र जग्गाधनीलाई तोकिएबमोजिम कुतबाली बुझाउनु नै मोहीको मुख्य कर्तव्य हुने ।

भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २६(१) को व्यवस्था जग्गाधनीका लागि स्वविवेकीय प्रकृतिको हो । तर, व्यक्त भइसकेको स्वविवेक परिवर्तन गर्न औचित्य, आधार र कारणको आवश्यकता पर्दछ । त्यसमा पनि कसैको हकाधिकार नै सिर्जना भइसकेको मोहियानी हक अपहरण गर्न जग्गाधनीलाई पनि अधिकार हुँदैन । कानूनले मोही पत्याउने वा रोज्ने कार्यविधि नतोकेको अवस्थामा यो कानूनी प्रश्न नभई तथ्यको प्रश्न हो । यसमा विवन्धनको सिद्धान्तको कुनै भूमिका हुँदैन । जग्गाधनीले साविक मोहीको मृत्युपछि निजका हकवालाहरूमध्ये कसलाई मोही पत्याउने भन्ने तथ्यको निर्णय एक पटकमात्र गर्न पाउँछ । जग्गाधनीलाई मोही रोज्न पाउने अधिकार छ भन्दैमा आज एउटा र भोलि अर्को हकवालालाई मोही पत्याउँदै जान पाउँछ भन्ने अर्थ गर्ने हो भने कानूनले दिएको यो अधिकारको दुरुपयोग हुन गई जग्गा कमाउने वास्तविक मोहीको हक सँधै जोखिममा पर्नजाने अवस्था सिर्जना हुन पुग्ने देखिन्छ, जो भूमिसम्बन्धी ऐनको मर्म र भावनाअनुकूल नहुने ।

इजलास अधिकृतः नारायण सुवेदी

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २५ गते रोज ५ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर, मा.न्या. श्री सुशीला कार्की र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती**, २०६५ सालको DF-००२८, घर उठाई खिचोला मेटाई चलन, *शिवनन्दन साह तेली वि. हितलाल साह तेली*

देवानी प्रकृतिका मुद्दाहरूमा पक्ष विपक्षको मौखिक भनाई वा फिराद प्रतिउत्तरपत्रको लेखाईभन्दा लिखतको आधारमा वास्तविक न्याय निरुपण गरी निष्कर्षमा पुग्नु वाच्छनीय पनि हुने हुँदा लिखतमा लेखिएको व्यहोरालाई अनदेखा गर्नु न्यायसंगत नहुने ।

सद्दे लिखत कागज स्वयंले जग्गा वादीका बाबुले प्रतिवादीका बाबुलाई रु.८०१। बापत भोग चलन गर्न दिएको भन्ने देखिएको र सो लिखत कानूनबमोजिम रजिष्ट्रेशन पारित नभएको अवस्था भए पनि उक्त लिखतको व्यहोरामा विवादको जग्गामा यिनै प्रतिवादीको बसोवास रहेको भन्ने तथ्यलाई अन्यथा अर्थ गरी वादीको मौखिक कथनको आधारमा निजका नाउँमा दर्ता नै नभएको सो मिन्ही जग्गा उल्लिखित जग्गा मिच्नेको १ नं. को एकाको हकको जग्गा अर्काले चापी मिची घुसाई खास हुँदैन भन्ने वाक्यांशले विवादको जग्गा वादी दावीबमोजिम प्रतिवादीले खिचोला गरेको भनी मान्न न्यायसंगत नदेखिने ।

आफ्नो तथा बाबुको नाममा दर्ता नै नरहेको मिन्ही प्रकृतिको यस्तो जग्गामा भोग समेत पुष्टि गर्न नसकेको अवस्था देखिएबाट

विवादको जग्गामा खिचोला मेटाई घर उठाई पाऊँ भन्ने वादी दावी पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृतः पुनाराम खनाल

कम्प्युटरः सीता गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल पुस २ गते रोज ५ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री रणबहादुर बम, मा.न्या. श्री प्रकाश वस्ती र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती**, दे.पु.इ.नं. २०६४-DF-०००२, निर्णय बदर दर्ता बदर दर्ता समेत, *उमादेवी जयसवाल वि. जयप्रकाश जयसवाल समेत*

कुनै मुद्दामा भएको मिलापत्रमा राखिएको कानूनविपरीतका शर्तहरूले व्यक्तिको कानूनी वा संवैधानिक हकलाई संकुचन गर्न नसक्ने अंश मुद्दामा भएको मिलापत्रको हैसियत भनेको अंश हकको प्राप्ति र विवादको समाप्ति हो । त्यसले कानूनबमोजिम अंश हक स्वरुप छुट्याएको सम्पत्तिमा अर्को पक्षको नियन्त्रण रहने भन्ने हुदैन । यदि कानूनले नै कुनै हकको उपभोगमा कुनै किसिमको नियन्त्रण वा संकुचन गरेको छ भने त्यसलाई निर्वाध उपभोगको दावी गर्न नसकिने । कानूनले कुनै किसिमबाट अवरोध नगरेको वा शर्त तोकेको हकको उपभोगलाई मुद्दाका पक्षले तोकेको शर्तका आधारमा कुण्ठित गर्ने हो भने संवैधानिक एवं काननी हक निरर्थक हुनजाने ।

मिलापत्र हुँदाको समयमा अर्थात् लैंगिक समानता कायम गर्न केही नेपाल ऐन संशोधन गर्ने ऐन, २०६३ द्वारा संशोधन हुनु अघिसम्म वहाल रहेको मुलुकी ऐन, स्त्री अंशधनको २ नं. ले भिन्न भएको कन्या, सधवा वा विधवा स्वास्नीमानिसले आफ्नो हकको चलमा सवै र अचलमा आधासम्म कसैको मञ्जूर नभए पनि आफ्नो खुश गर्न पाउँछन् भन्ने कानूनी व्यवस्था गरेको परिप्रेक्ष्यमा त्यस्तो कानूनी व्यवस्थाको प्रतिकूल कसैले कुनै सम्झौता वा मिलापत्र वा अन्य कुनै व्यहोरामा सहमति जनाएको भए पनि त्यसले कानूनी मान्यता पाउन नसक्ने ।

मिलापत्र आफैँमा कानूनको उपज भएकाले मिलापत्रमा उल्लिखित कुनै पनि शर्तले कानूनी व्यवस्थालाई निस्तेज वा निष्क्रिय पार्ने शक्ति ग्रहण गर्दैन । सम्पत्ति जसको नाममा रह्यो उसैको मात्र हुन नसक्ने विधिशास्त्रलाई हाम्रो कानूनी प्रणालीले पनि स्वीकारिआएको छ । नाम नरहेकै व्यक्तिको समेत सम्पत्तिमा हक अन्तर्भूत रहेको हुन्छ । उपभोग गर्न नसकिने वस्तुलाई सम्पत्तिको रुपमा ग्रहण गर्नुहुँदैन । आफ्नो नाममा सम्पत्ति छ भन्दैमा त्यसमा हक अन्तर्भूत रहेका अन्य हकवालाको हकलाई समेत निजहरूको सहमतिविना नियन्त्रित गर्न सकिन्न । यसो गरिएको रहेछ भने त्यसले अन्य व्यक्तिका हकमा मान्यता पाउन नसक्ने ।

कानूनले नै आधासम्ममा आफूखुश गर्न पाउने गरी दिएको अधिकारलाई कटौती गर्ने गरी शेषपछिको वकसपत्रको लिखतलाई पूर्ण रुपमा निष्क्रिय पार्न नसकिने ।

ईच्छा र मञ्जूरीअनुसार शर्त बन्देज राख्न पाउने कुराले कानूनप्रदत्त हकलाई नै कुण्ठित तुल्याउने हैसियत ग्रहण गर्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृतः उमेश कोइराला

इति संवत् २०६६ साल फागुन ६ गते रोज ५ शुभम् ।

- यसै लगाउको दे.पु.इ.नं. २०६४-DF-०००१, शेषपछिको वकसपत्र बदर, *उमादेवी जयसवाल वि. जयप्रकाश जयसवाल समेत* भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

## संयुक्त इजलास

१

**मा.न्या.श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी**, २०६१ सालको फौ.पु.नं. ३७३८, ३७३९ र ३७४०, भवितव्य ज्यान, *अरुणकुमार मिश्र वि. नेपाल सरकार, युवराज पुरी समेत वि. नेपाल सरकार, सुवर्णलाल माझी समेत वि. नेपाल सरकार*

प्रतिवादीहरू उपर ज्यानसम्बन्धी महलको ५ नं. को कसूर र ६(२) न. को सजायको दावी

गरिएको छ । केही गर्दा भवितव्य पर्न गई ज्यान समेत मरेमा सोही अवस्थाका लागि कसूर र सजायको व्यवस्था ऐनको उक्त दफाले गरेको छ । यो वारदात नै भवितव्य (Accidental incidence) भनी दावी गरिएकोले प्रतिवादीहरूको आपराधिक उद्देश्य (Criminal motive) र मार्नु पर्ने नियत (Mens rea) बारे विशेष विवेचना गर्नुपर्ने आवश्यकता छैन । अभियोजन पक्षबाटै प्रस्तुत वारदातलाई भवितव्यको वारदात हो भन्ने निष्कर्षमा पुगी सोहीअनुसारको दावी गरेको देखिँदा त्यसतर्फ थप प्रमाणको खोजी गर्नु पनि परेन । मार्ने नियत नभएर पनि यी प्रतिवादीहरूले गरेको कुटपीट समेतको कार्यबाट भवितव्य परी मृत्यु भएको प्रमाणित हुने ।

इजलास अधिकृतः विदुर कोइराला

कम्प्युटरः सरस्वती पौडेल

इति संवत् २०६६ साल पुस २० गते रोज २ शुभम ।

२

**सं.प्र.न्या.श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय**, २०६६-WH-०५२, बन्दी प्रत्यक्षीकरण, *गगनसिंह ठकुरी वि. कारागार कार्यालय काठमाडौँ समेत*

अन्तिम भएर रहेको फैसलाले निश्चित गरेको सजायबाट सामान्यतः कसैले पनि उन्मुक्तिको अपेक्षा राख्नु हुँदैन र अदालतले पनि त्यस्तो अपेक्षालाई जायज ठहऱ्याउन नसक्ने ।

कुनै पनि व्यक्ति, अधिकारी वा निकायको गल्तीको परिणाम व्यक्तिले भोग्नु पर्ने अवस्था आउनु हुँदैन । कसैको गल्तीको कारणबाट कुनै पनि व्यक्तिको वैयक्तिक स्वतन्त्रता एक क्षणका लागि पनि कुण्ठित हुन नहुने ।

जब व्यक्तिको वैयक्तिक स्वतन्त्रता खतरामा पर्दछ, त्यस अवस्थामा न्यायपालिकाले आफूमा अन्तरनिहीत अधिकारअन्तर्गत त्यसलाई जोगाउने भूमिका निर्वाह गर्दछ । अझ संविधानले नै न्यायपालिकालाई त्यस किसिमको भूमिका निर्वाह गर्न अधिकार प्रदान गरेको अवस्थामा आफूलाई जनताको हक अधिकारको संरक्षकको रुपमा प्रस्तुत गर्नु न्यायपालिकाको परम कर्तव्य बन्ने ।

फैसलाबमोजिम भन्दैमा कानूनले तोकेको हदभन्दा बढी कैदमा बस्नुपर्ने र वैयक्तिक स्वतन्त्रता कुण्ठित हुने अवस्था आउन नहुने ।

इजलास अधिकृतः उमेश कोइराला

इति संवत् २०६६ साल चैत २९ गते रोज १ शुभम

३

**मा.न्या.श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय**, २०६५ सालको रिट नं. WO-०५४२, उत्प्रेषण, अधिकारपृच्छा परमादेश समेत, *अधिवक्ता रामकृष्ण काफ्ले समेत वि. गृह मन्त्रालय समेत*

अदालतको असाधारण अधिकारक्षेत्रअन्तर्गतको उपचार माग गर्ने पक्षले जुन कार्य वा निर्णयलाई चुनौती दिने हो त्यस्ता कार्य वा निर्णयलाई व्यवहारद्वारा समेत अस्वीकार गरी त्यस्तो विवादित कार्य वा निर्णयका विरुद्ध न्यायिक उपचारको बाटो अवलम्बन गर्न सक्नुपर्ने ।

एकपटक आफूले स्वीकार गरी जरीवाना तिरिसकेको विषयलाई सार्वजनिक सरोकारको विषय भन्दै रिट निवेदनबाट चुनौती दिन नमिल्ने ।

इजलास अधिकृतः विदुर कोइराला

इति संवत् २०६६ साल पुस २२ गते रोज ४ शुभम

४

**मा.न्या.श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय**, २०६४ सालको रिट नं. WO-०६६४, उत्प्रेषण, परमादेश अधिकारपृच्छा समेत, *अधिवक्ता विष्णुप्रसाद भट्टराई समेत वि. व्यवस्थापिका संसद समेत*

निवेदकहरूले दावी गरेको संविधानसभाको निर्वाचनपूर्वको अवस्था हाल विद्यमान नभएको, साथै विवादित रकम आर्थिक वर्ष २०६४।६५ को विनियोजन विधेयकबाटै व्यवस्था भएको तथा सो विधेयक तत्कालीन संसदबाट पारित भई सो रकम उक्त आर्थिक वर्षभित्रै विकास कार्यक्रममा खर्च भइसकेको अवस्था हुँदा संविधानको निर्वाचनपूर्वको अवस्था एवं परिस्थिति हाल विद्यमान नभई प्रस्तुत निवेदनको औचित्य नै समाप्त भइसकेको समेत

अवस्थामा प्रस्तुत निवेदनको अरु तथ्यगत प्रश्नहरू तर्फ यस अदालतले प्रवेश गरी थप व्याख्या र विवेचना गर्नुपर्ने आवश्यकता नदेखिने ।

इजलास अधिकृतः विदुर कोइराला

इति संवत् २०६६ साल पुस २२ गते रोज ४ शुभम

५.

**मा.न्या.श्री रामप्रसाद श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की**, २०६१ सालको फौ.पु.नं. ३८०४ र ३७७२, कर्तव्य ज्यान, *नेपाल सरकार वि. ऋषिराम भण्डारी समेत, रामहरि भण्डारी समेत वि. नेपाल सरकार*

गहिरो चोट पुऱ्याई गरिएको कुटपीटले मानिस मर्न पनि सक्दछ भन्ने सामान्य समझ भएको जुनसुकै मानिसले सहजै अनुमान गर्नुपर्ने ।

वारदातमा प्रत्यक्ष संलग्नता रहेको भन्ने प्रमाणद्वारा पुष्टि र स्थापित हुन नसकेको साथै वारदातमा उक्साएको वा वचन दिएको भन्ने पनि नदेखिएको स्थितिमा ठोस आधार प्रमाणबिना प्रतिवादी ऋषिराम भण्डारीलाई आरोपित कसूरमा कसूरदार कायम गर्न नमिल्ने ।

प्रतिवादीले मृतकउपर अन्य प्रकारले चोट छाडेको भन्ने तथ्य स्वतन्त्र प्रमाणबाट पुष्टि नभएको स्थितिमा केवल जाहेरीका आधारमा मात्रै यी प्रतिवादी सान्नानी भण्डारीलाई कसूरदार ठहर गरी सजाय गर्न न्यायोचित नदेखिने ।

इजलास अधिकृतः विदुर कोइराला

इति संवत् २०६६ साल माघ ४ गते रोज २ शुभम्

## इजलास नं. १

१

**मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री गौरी ढकाल**, २०६० सालको दे.पु.नं.९६६०, हक कायम दर्ता, *बुधो झागडनी वि. मनिलाल उराव समेत*

पहिला कुनै व्यक्तिको नाउँमा दर्ता कायम नरहेको र कुनै व्यक्तिको स्वामित्वमा आई नसकेको जग्गाको सम्बन्धमा कुनै अंश मुद्दाको तायदातीमा उल्लिखित व्यहोराबाट अन्य कुनै मुद्दामा भएको मिलापत्रबाट कसैको हक जाने वा कसैको हक कायम हुने भनी अर्थ गर्नु कानून र न्यायको सिद्धान्तअनुकूल नदेखिने ।

इजलास अधिकृतः कृष्णमुरारी शिवाकोटी

कम्प्युटरः बेदना अधिकारी

इति संवत् २०६६ साल माघ ३ गते रोज ४ शुभम्

- यसै लगाउको २०६० सालको दे.पु.नं.९६५९, हक कायम दर्ता, *बुधो झागडनी वि. मनिलाल उराव समेत* भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

२

**मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला**, २०५९ सालको दे.पु.नं.९०९०, फैसला बदर, *रामसेवक यादव वि. सोभित साह तेली*

गुठी संस्थान कानूनी व्यक्ति हो । कानूनी व्यक्तिले आफ्नो सम्पत्ति बेचबिखन दान दातव्य वा अन्य कुनै प्रकारले हक हस्तातरण गर्न पाउने नै हुन्छ । गुठी संस्थानले आफ्नो सम्पत्ति यसरी हक हस्तान्तरण गर्न नपाउने भनी कुनै कानूनले बन्देज लगाइएको पाइदैन । यसरी गुठी संस्थानले जग्गा प्रतिवादी सोभित साहको नाममा रैकर परिणत गर्ने गरी गरको निर्णयउपर पहिला नै मुद्दा परी अन्तिम भइसकेपश्चात् उही विषयमा यिनै प्रतिवादीहरू उपर पुनः फिराद दिई मुद्दा गर्न न्यायिक निश्चितता (Finality of judgement) को सिद्धान्तविपरीत हुने ।

अ.वं. ८६ नं. तेस्रो पक्षको हक मेटिन गएमा आकर्षित हुने हो । बिनाआधार सक्षम अदालतको फैसला सामान्यतः बदर हुने अवस्था हुदैन । पटक पटक थरिथरिका व्यक्ति उठी मुद्दा हाल्ने र मुद्दा थोपार्ने, अर्को पक्षलाई दुःख हैरानी दिने प्रवृत्तिलाई प्रोत्साहन दिन यो कानूनको निर्माण भएको पनि होइन । केवल कतैबाट कसैको हक मेटिन नपाओस् भनी हक सुरक्षित गर्न गरिएको विशेष र अपवादात्मक व्यवस्थाले विवादको जग्गा पोखरीकै जग्गा हो भनी मान्ने अवस्था नदेखिने ।

इजलास अधिकृतः माधवप्रसाद अधिकारी

कम्प्युटरः विश्वराज पोखरेल

इति संवत् २०६६ साल भदौ १५ गते रोज २ शुभम्

- यसै लगाउको २०५९ सालको दे.पु.नं.९०९१, दर्ता बदर, *रामसेवक यादव वि. सोभित साह तेली* भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

३

**मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला**, २०५७ सालको दे.पु.नं.७०६३, खिचोला, *कुमाले थापा समेत वि. रामअयोध्या प्रसाद कलवार*

वस्तुतः सर्भे नापी भएको जग्गा जमीनको क्षेत्रफल छुट्याउने र नापीबाट कायम गरिएका कित्ताको सीमा छुट्याउने मुख्य आधारको रुपमा सर्भे नापीको नक्सालाई मान्नुपर्ने हुन्छ । यदि त्यसमा विवाद हुन्छ भने मौकैमा सच्याउनेतर्फ कारवाही चलाई त्यसलाई निश्चितता प्रदान गर्नुपर्ने ।

सर्भे नापीबाट निर्विवादरुपमा जग्गा नापी भै कित्ता छुट्याई नक्सा सीमाङ्कन गरी वाउण्ड्री छुट्याई कायम भइरहेको कित्ता जग्गालाई आधार रुपमा लिई विवाद निरुपण गर्नुपर्ने ।

जे जस्तो किसिमबाट सर्भे नक्सामा वाउण्ड्री कायम भई कित्ताकाट हुन्छ सो नै प्रत्येक कित्ताको वाउण्ड्री समेतको सो कित्ताको स्वरुप कायम भएको मान्नुपर्ने हुँदा सोहीअनुसार नै भोग गरेको मान्नुपर्ने ।

इजलास अधिकृतः कृष्णप्रसाद सुवेदी
कम्प्युटरः बेदना अधिकारी
इति संवत् २०६६ साल कात्तिक २५ गते रोज ४ शुभम्

४

**मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय**, २०६२ सालको रिट नं. ३०७९, उत्प्रेषण मिश्रित परमादेश, *जगतबहादुर खत्री समेत वि. शिक्षा तथा खेलकुद मन्त्रालय समेत*

शैक्षिक योग्यता प्राप्त गर्नु भन्दा अगावै लिएको तालिमबापतको अङ्क पाउनु पर्दछ भन्न शिक्षक सेवा आयोग नियमवली, २०५७ को नियम ३१ ले न्यूनतम् शैक्षिक योग्यता प्राप्त गरिसकेपछि लिएको तालिमले मात्र अङ्क पाउने व्यवस्था गरेकोबाट निवेदकहरूले तालिमबापतको अङ्क प्राप्त गर्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृतः नेत्रप्रकाश आचार्य
कम्प्युटरः विश्वराज पोखरेल
इति संवत् २०६६ साल भदौ ३० गते रोज ३ शुभम्

५

**मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय**, २०६३ सालको रिट नं. ०१६१, उत्प्रेषण, *ओमप्रकाश चौधरी वि. शिक्षा तथा खेलकुद मन्त्रालय समेत*

जिल्ला शिक्षा कार्यालयको निर्णयबमोजिम अस्थायी माध्यमिक शिक्षक तृतीय श्रेणीमा नियुक्ति पाई कार्यरत् रहँदैको अवस्थामा शिक्षक सेवा आयोगबाट भएको निम्न माध्यमिक विद्यालयको शिक्षक पदमा स्थायी नियुक्ति पाई माध्यमिक शिक्षकबाट विस्थापित भएको व्यक्ति शिक्षा ऐन, २०२८ को दफा ११च को प्रतिवन्धात्मक वाक्याशंको देहाय (१) र (२) तथा शिक्षक सेवा अयोग नियमावली, २०५७ को नियम १०(६) को देहाय (१) र (२) बमोजिम उम्मेद्वार हुन पाउने नै देखिँदा गलत विवरण "विस्थापित" भनी दरखास्त फाराम भरी उम्मेद्वार भै सिफारिश भएको भन्ने देखिन नआउने ।

इजलास अधिकृतः नेत्रप्रकाश आचार्य
कम्प्युटरः बेदना अधिकारी
इति संवत् २०६६ साल भदौ ३० गते रोज ३ शुभम्

६

**मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा**, २०६५ सालको दे.पु.नं. ०२३४, माना चामल, *सुरेश महर्जन सुवाल समेत वि.तिमिला सुवाल समेत*

वादीले तारेख गुजारी कानूनले थाम्ने थमाउने म्याद गुजारी वसेको अवस्था भएको र आदेशानुसार साक्षी उपस्थित गराई वकपत्रसमेत भइसकेको अवस्थामा प्रस्तुत मुद्दामा मुलुकी ऐन अ.वं. १८५क(२) आकर्षित हुने नभई संक्षिप्त कार्यविधि ऐन, २०२८ को दफा ११(२) आकर्षित

हुने देखिँदा प्रस्तुत मुद्दामा बुझेसम्मका प्रमाणका आधारमा मुद्दाको फैसला गर्नुपर्ने ।

इजलास अधिकृतः नेत्रप्रकाश आचार्य

कम्प्युटरः विश्वराज पोखरेल

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २५ गते रोज ५ शुभम्

७

**मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल**, २०६१ सालको दे.पु.नं.९१७६, बण्डापत्र बदर दर्ता बदर दर्ता, *विजय पाण्डे समेत वि. जयनन्दन मिश्र*

तत्कालीन अवस्थामै आफ्नो जग्गा दर्ता गराई पाऊँ भनी आधिकारिक निकायमा निवेदन गरेको सोमा तत्कालीन अवस्थामा कारवाही नभई पछि यी वादीले मालपोत कार्यालयमा दिएको निवेदनका आधारमा हक वेहकमा सुनाएकाले फिराद परेकालाई मौकैमा कारवाही नचलाई बसेको भनी मान्न नमिल्ने ।

अचल सम्पत्ति विनास्रोत प्राप्त हुन नसक्ने र स्रोतविनाको प्राप्तिले मान्यता प्राप्त गर्न सक्ने नहुँदा विनाप्रमाण प्रतिवादीहरूका पिताले जग्गा दर्ता गराई अंशियारमा बण्डा भएको कार्य दूषित देखिँदा सो जग्गा समेत समावेश गरी भएको बण्डापत्र सो हदसम्म बदर हुने ।

इजलास अधिकृतः नेत्रप्रकाश आचार्य

कम्प्युटरः मुकुन्द विष्ट

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १० गते रोज ३ शुभम

यसै लगाउका निम्न मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएका छन्:

- २०६१ सालको दे.पु.नं.९१७४, जग्गा खिचोला चलन, *विजय पाण्डे वि. जयनन्दन मिश्र*
- २०६१ सालको दे.पु.नं.९१७५, जग्गा खिचोला चलन, *रामेश्वर पाण्डे वि. जयनन्दन मिश्र*

८

**मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल**, २०६१ सालको दे.पु.नं.८८८९, बहाल भराई पाऊँ, *नानीबाबु श्रेष्ठ वि. पूर्णभक्त प्रधानाङ्ग*

भोगवन्धकी लिखतको हकमा भाखा नाघेका मितिले २ वर्षभित्र वन्धक लिएको अचल सम्पत्ति चलन गर्न नदिएको अवस्थामा चलन चलाई माग्न नालिस दिनुपर्ने र सो भाखाभित्र नालेस नदिएमात्र लिखत कपाली हुने लेनदेन व्यवहारको महलको ३ नं. को व्यवस्था हो । तर घर वहाल र जग्गाको आयस्ता नखोज्ने भनी उल्लेख भएको र सोही दिन छुट्टै घर वहालको कागज समेत भइसकेको देखिँदा वादीले भोगवन्धकी लिखतबमोजिमको अचल सम्पत्ति चलन पाएको भन्ने नदेखिँदा प्रतिवादीको जिकीरबमोजिम हुन नसक्ने ।

इजलास अधिकृतः नेत्रप्रकाश आचार्य

कम्प्युटरः मुकुन्द विष्ट

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक १० गते रोज ३ शुभम्

९

**मा.न्या.श्री खिलराज रेग्मी र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती**, २०६१ सालको दे.पु.नं.९७७१, अंश चलन, *प्रिकल बैद्य समेत वि. विष्णुहरि बैद्य समेत*

मोहनहरिले अंश छोडपत्र गर्दा स्वास्नी, छोराको अंश हक प्राप्त गर्ने नैसर्गिक हकलाई असर पार्ने गरी अंश भरपाई पारित गरेको देखिँदा सो अंश छोडपत्रको लिखतका आधारमा वादीहरूले अंश नपाउने भन्न नमिल्ने ।

पैतृक सम्पत्ति अचल जग्गा जमीन छदाछँदै चल सम्पत्ति किन लिनु परेको सोको कारण उल्लिखित लिखतमा खुल्न नसकेको तथा अंश भरपाई गरिलिने बाहेक अन्य अंशियारका नाउँमा अंशबण्डाको २ नं. बमोजिम वरावर अंशबण्डा गरेको नदेखिने ।

केवल मोहनहरिबाट अंश पाउने जिकीर लिएको भरमा मोहनहरिले अचल सम्पत्ति प्राप्त नगरेको अवस्थामा वादीलाई अंश पाउने हकबाट बञ्चित गर्न पाउने देखिन्न । मुद्दा चल्दा चल्दैका अवस्थामा प्रतिवादी विष्णुहरि, अम्बिका वैद्यको समेत मृत्यु भैसकेको अवस्थामा मोहनहरिका श्रीमती छोरा वादीहरूले अंश हालसम्म

प्रतिवादीबाट प्राप्त गरेको नदेखिँदा जम्मा तीन अंशियार कायम हुने ।

इजलास अधिकृतः विदुर कोइराला

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक २४ गते रोज ३ शुभम्

## इजलास नं. १

१

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या. श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय**, २०६२ सालको दे.पु.नं.८३९६ र ९३९७ जग्गा खिचोला, *प्रेमनाथ ढकाल वि.लक्ष्मी श्रेष्ठ समेत, लक्ष्मी श्रेष्ठ समेत वि. प्रेमनाथ ढकाल*

फैसलाको ठहरमा पुग्न विवादित जग्गाको भैआएको नाप नक्साको आकार प्रकार र सर्भे नापीको क्षेत्रफल आकार प्रकार भिडाएर जग्गाको स्वरुप (Structure) एकनाशको छ छैन सो यकीन गर्नुपर्ने ।

इजलास अधिकृतः महेन्द्रप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटरः सुदिप पंज्ञानी

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ९ गते रोज ३ शुभम्

२

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या. श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय**, २०६२ सालको दे.पु.नं.९७२८, निर्णय दर्ता बदर, *गणेशलाल श्रेष्ठ वि. बलध्वज राणा*

वादीले आफ्नो निर्णयबारे थाहा पाएपछि जग्गा पजनीको १७ नं. र जग्गा मिच्नेको १८ नं. अनुरूप ६ महिनाभित्र फिराद दायर गर्नुपर्नेमा सो हदम्याद नघाई फिराद दायर गरेको देखिँदा वादीको फिराद कानूनले निर्दिष्ट गरेको हदम्यादभित्र परेको देखिन आएन । हदम्यादभित्र नपरेको फिरादबाट मुद्दाको तथ्यभित्र प्रवेश गरी इन्साफ गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृतः नारायण रेग्मी

कम्प्युटरः सुदिप पंज्ञानी

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ३० गते रोज २ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या. श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय**, २०५८ सालको रिट नं. ३०७५, उत्प्रेषण समेत, *अनन्तमान जोशीको मु.स.गरी आफ्नो हकमा समेत मनोजमान जोशी समेत वि. भूमिसुधार कार्यालय काठमाडौं समेत*

दाताले आफ्नो चल अचल सम्पत्ति वा आयस्ता वा सम्पत्तिमा आफ्नो हक छाडी सार्वजनिक हितका लागि समर्पण गर्ने हुँदा गुठी भनेको कुनै सामाजिक वा धार्मिक कार्य निरन्तर रुपले सञ्चालन गर्न आफ्नो सम्पत्तिको हक छाडी हस्तान्तरण गर्ने कार्य पनि हो । गुठीबाट व्यक्तिको हक समाप्त हुने र समूह, सम्प्रदाय वा समुदायको हक सिर्जना हुने प्रक्रिया भएकाले गुठी राख्नेले आफ्नो इच्छापत्र मार्फत व्यक्त इच्छालाई नमासिने गरी जोगाई निरन्तरता (Perpetual continuity) प्रदान गर्नु राज्य वा राज्यका अंगका रुपमा रहेका सवै निकायहरूको कानूनी कर्तव्य हुने ।

जग्गाको आकार र जग्गामा निवेदकहरूको घरले चर्चेका कारण बाँडफाँड गर्न नमिल्ने हुँदा कानूनबमोजिम निवेदक मोहीका नाममा पूरै जग्गाको स्वामित्व कायम हुन आए पनि परम्परा, धर्म, संस्कृति, प्रचलन, मान्यता र कानूनले नै गुठी प्रथालाई मान्यता प्रदान गरी गुठी नेपालको संस्कृति, धर्मको एक अभिन्न कानूनी अंग भएको र त्यसलाई कानूनले नै मान्यता प्रदान गरेको अवस्थामा दावीको जग्गामा निवेदकहरू गुठियार नभए पनि गुठीको पूरै जग्गाको जग्गाधनी बनेपछि त्यस्तो जग्गासँग गाँसिएको र त्यस्तो जग्गाले बाकेको Legacy बाट निवेदकहरू उन्मुक्त हुन नसक्ने ।

इजलास अधिकृतः नारायण रेग्मी

कम्प्युटरः सुदिप पंज्ञानी

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ३० गते रोज २ शुभम् ।

- यसै लगाउको २०५८ सालको रिट नं.३०६९, उत्प्रेषण, *गणेशलाल श्रेष्ठ वि. बलध्वज राणा समेत* भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

४

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय**, २०६२ सालको रिट नं.

३०७२, उत्प्रेषण, *गुणरत्न शाक्य वि.अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग समेत*

निवेदक कर्जा कमिटिमा नरहेको, निवेदकउपर विभागीय कारवाही प्रारम्भ भएपश्चात् बढुवा पाइसकेको भन्ने देखिए पनि संगठनको कर्मचारीको उच्च नैतिकता, अनुशासित एवं शुद्धता हुनुपर्ने र कर्मचारीले सेवा शर्त नियमावलीको आचरण पूरा गरेको पालना हुनुपर्दछ । आचरणविपरीत काम गरी संगठनको हित विपरीत काम गर्ने कर्मचारीको लागि नै विभागीय कारवाहीसम्बन्धी व्यवस्था भएकाले आचरणविपरीतको कार्य बढुवा हुँदैमा क्षम्य नहुने ।

इजलास अधिकृतः नारायण रेग्मी

कम्प्युटरः निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल पुस २० गते रोज २ शुभम् ।

- यस्तै प्रकृतिको २०६२ सालको रिट नं.३०७८, उत्प्रेषण, *घमानसिँह खड्का वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग समेत* भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

५

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय**, २०६५ सालको फौ.पु.नं.CR ०४५९, ज्यान मार्ने उद्योग, *नेपाल सरकार वि. चन्द्र फागो समेत*

किटानी जाहेरी, पीडितको कागज तथा निजले अदालतसमक्ष रोहितले गोली हान्यो अरुले केही गरेन भनी लेखाएको वकपत्र, शंकर गुरुङको अदालतसमक्षको वकपत्र समेतका आधारमा यी प्रतिवादीहरू कसूरमा निर्दोष नभए तापनि पीडितलाई ज्यान मार्ने उद्देश्यले आफैले बन्दुक प्रहार गरेको वा मार्नलाई वचन दिएको वा मद्दत गरेको भन्ने देखिँदैन । यस्तो अवस्थामा प्रतिवादीहरूको घटनास्थलमा उपस्थित रहेको आधारमा ज्यान सम्बन्धीको १५ नं. अनुसार सजाय गर्नु कानूनको रोहमा न्यायोचित नदेखिने ।

इजलास अधिकृतः उपेन्द्रप्रसाद गौतम

कम्प्युटरः सुदिप पंज्ञानी

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २१ गते रोज १ शुभम् ।

६

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या. श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय**, २०६४ सालको रिट नं. WO-०५२०, उत्प्रेषण समेत, *कृषि विकास बैंक लि. नगर शाखा विराटनगर वि. मालपोत कार्यालय विराटनगर समेत*

एउटै घरजग्गा दोहोरो रोक्का राख्न नहुने, दोहोरो रोक्का भए पछिल्लो रोक्का वदर भै अघिल्लो रोक्काले नै मान्यता पाउने ।

पहिला रोक्का राख्ने बैंकलाई कुनै जानकारी वा सूचना नदिई पछि रोक्का राखेको कार्य मान्य सिद्धान्तको समेत विपरीत देखिएकाले रोक्का फुकुवा नहुँदै पुनः रोक्का राखेको कार्य आफैमा गैरकानूनी, गैरन्यायिक र लापरवाहीपूर्ण देखिने ।

एकाको रोक्का हुँदाहुँदै अभिलेख हेर्दै नहेरी दोहोरो रोक्का राख्ने कर्मचारीलाई कानूनी कारवाही गर्नु अनिवार्य हुन्छ । गैरजिम्मेवार कार्य गर्ने प्रवृत्ति अन्त्य गरिनु कानूनी शासन भएका मुलुकको आधारभूत आवश्यकता नै हो । गैरकानूनी रोक्काका आधारमा दा.खा. दर्ता गर्न नमिल्ने भनी गरिएको निर्णयको कानूनी मान्यता शून्य हुने ।

इजलास अधिकृतः नारायण रेग्मी

कम्प्युटरः सुदिप पंज्ञानी

इति संवत् २०६६ साल पुस २० गते रोज २ शुभम् ।

७

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या. श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय**, २०६५ सालको रिट नं. WO-०१७७, परमादेश, *संजयकुमार झा वि. पश्चिम क्षेत्रीय प्रहरी कार्यालय पोखरा समेत*

प्रहरी नियमावलीले निर्दिष्ट गरेको प्रक्रिया अनुशरण गरी पुनरावेदन गरी आफूलाई भएको अन्यायका विरुद्ध उपचार खोज्न पाउने निवेदकको हकलाई विपक्षीहरूले कुण्ठित गरेको नभै निवेदक नै आफ्नो कर्तव्य पूरा नगरी उपचार खोज्ने कार्यमा उदासीन रहेको देखिँदा यस अदालतले निवेदकलाई मद्दत गर्न सक्दैन । निवेदकले पुनरावेदन नै दर्ता नगरी पुनरावेदनमा कारवाही किनारा गरिदिनु भनी परमादेशको आदेशको माग

गरेको पाइँदा निवेदन दावी निरर्थक र प्रयोजनहीन देखिन आयो ।

हुलाकमार्फत पुनरावेदन गरेको भन्ने निवेदन दावी प्रमाणित हुन नआएकोले र पुनरावेदन सुन्ने साधिकार निकायबाट पुनरावेदन दर्ता हुन नआएको भन्ने लिखित जवाफलाई निवेदकले अन्यथा भन्न सकेको नदेखिँदा निवेदकको पुनरावेदनमा निर्णय गर्नु भनी परमादेशको आदेश जारी गर्नु न्यायिक मूल्य मान्यता र परमादेशको सैद्धान्तिक अवधारणा विरुद्ध हुने ।

इजलास अधिकृतः नारायण रेग्मी
कम्प्युटरः निर्मला भट्ट
इति संवत् २०६६ साल पुस २० गते रोज २ शुभम ।

८

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री रणबहादुर बम**, २०६३ सालको रिट नं. wo-०४३५, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, *नागेन्द्रप्रसाद यादव वि. मलंगवा नगरपालिका समेत*

De Facto Docrtine अनुसार पदाधिकारीको नियुक्ति Defective हुन सक्छ । तर नियुक्ति Defective नै भएपनि नियुक्ति भएको पदाधिकारीले प्रयोग गरेको अधिकार र गरेको कामकारवाही De Jure officer ले गरे सरह हुने हुँदा नियुक्ति गलत भए पनि पदमा वहाल हुँदा गरेको काम र गरेको निर्णय De Facto Doctrine अनुसार सही मानिने हुनाले मिति २०६२।१०।२६ को निर्वाचन खारेज भए पनि उनीहरूले गरेको काम समेत बदर गर्ने गरी सरकारले निर्णय गरेको नदेखिएको हुँदा De Facto Doctrine अनुसार निर्णय बदर हुन नसक्ने ।

इजलास अधिकृतः महेन्द्रप्रसाद पोखरेल
कम्प्युटरः सुदिप पंज्ञानी
इति संवत् २०६६ साल पुस ६ गते रोज २ शुभम् ।

९

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या. श्री मोहनप्रकाश सिटौला**, २०६१ सालको दे.पु.नं. ८६१०, अंश दर्ता, *गीतादेवी दाश समेत वि.रामलताकुमारी चौधरी कथवनियाइन*

प्रतिवादीहरूले वादी रामलतालाई आफ्नो अंशियार नभएको भनी प्रतिउत्तरमा जिकीर लिए पनि निजलाई प्रतिवादीहरूको अंशियार कायम गरी अंश पाउने ठहराई फैसला गरेउपर निजहरूले पुनरावेदन पत्रमा जिकीर नलिएबाट उक्त प्रश्नको न्यायिक निराकरण भैसकेको मान्नुपर्ने ।

जुन वखत छोरीले अंश पाउने कानूनी व्यवस्था नै थिएन, सो वखत यी वादीले अंश पाऊँ भनी दायर गरेको फिरादको आधारमा वादी समेत अंश मुद्दाको रोहबाट अंशियार कायम गर्नु न्यायोचित नहुने हुँदा निज छोरीहरूको विवाह खर्च पर सानुपर्ने ।

इजलास अधिकृतः नारायण रेग्मी
कम्प्युटरः निर्मला भट्ट
इति संवत् २०६६ साल पुस २२ गते रोज ४ शुभम्

१०

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या. श्री मोहनप्रकाश सिटौला**, २०६६ सालको रिट नं. WO-००३३, उत्प्रेषण समेत, *दीपेन्द्रबहादुर क्षेत्री वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत*

देशको अर्थतन्त्रको मेरुदण्ड मानिने केन्द्रीय बैंकको नेतृत्व दिने गभर्नर पद राजनीतिक परिवर्तको साथसाथै परिवर्तन नहोस् देशको आर्थिक, मौद्रिक र वित्तीय नीतिले निरन्तरता पाउनुपर्दछ भनी गभर्नर पदलाई Fixed tenure पद बनाइएको हो । प्राकृतिक कारणबाहेक गभर्नर पद पदावधि नपुग्दै रिक्त भै अर्को व्यक्तिलाई गभर्नर पदमा नियुक्ति गर्नुपर्ने अवस्था र कारणलाई Unfortunate मान्नुपर्ने ।

निवेदकलाई गभर्नर पदमा साविकका गभर्नरलाई भ्रष्टाचार मुद्दा चली शुरु अदालतबाट दोषी ठहराएको कारण नेपाल सरकाले गठन गरेको समितिले गरेको सिफारिश र दिएको रायको शर्तमा conditional नियुक्ति गरिएको र विजयनाथ भट्टराईलाई पनि सोही शर्तमा अवकाश गरिएको भन्ने कुरा निवेदकलाई जानकारी नहुने भन्ने प्रश्न नै नआउने ।

निवेदकलाई आरोप लगाई penal consequence निस्कने गरी कारवाही गरी पदमुक्त गरिएको अवस्था नहुँदा निवेदकलाई सफाइको मौका दिइरहनु पर्दैन । कसैलाई आरोप वा अभियोग लगाउनु पर्दा मात्र त्यस्तो आरोप वा अभियोगअनुसारको काम गरेको हो होइन भनी सफाइको प्रमाण पेश गर्ने मौका प्रदान गर्नुपर्ने ।

नेपाल सरकारले विजयनाथ भट्टराईलाई विचाराधीन मुद्दामा सफाई पाएमा सोहीबमोजिम हुने अर्थात सफाइ पाएमा स्वतः पुनर्वहाली गर्ने शर्तमा अवकाश दिन्छ भने त्यस अवस्थामा त्यस्तो निर्णय वदर गराइरहन पर्दैन । यदि सिफारिश गर्न गठित समितिले कुनै शर्त नराखी अवकाश दिने भनी ठाडो सिफारिश गरेको र त्यही ठाडो सिफारिशको आधारमा विजयनाथ भट्टराईलाई अवकाश दिएको भए त्यस अवस्थामा निवदेकको गभर्नर पदको नियुक्ति unconditional हुने थियो । केही हदसम्म निवेदकलाई हटाउँदा सायद partially प्राकृतिक न्यायको कुरा आउन सक्ने थियो । तर जसरी विजयनाथ भट्टराईको वर्खासी Conditional थियो त्यसैगरी निवेदकको नियुक्ति पनि conditional भएको कारण दुवैलाई प्राकृतिक न्यायको सिद्धान्त आकर्षित नहुने ।

इजलास अधिकृतः नारायण रेग्मी

कम्प्युटरः सुदिप पंज्ञानी

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ५ गते रोज ६ शुभम ।

११

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव**, २०६४ सालको दे.पु.नं.CI-०२७७, परमादेश, *बीरगञ्ज भन्सार कार्यालय पर्सा वि. पवनकुमार गुप्ता*

प्रतिवादीले सफाई पाउने भै अदालतबाट दाल चोरी पैठारी मुद्दामा भएको अन्तिम फैसलाबमोजिम बीरगञ्ज भन्सार कार्यालयले गरेको लिलामबाट जम्मा भएको धरौटी रकम फिर्ता दिनुपर्ने ।

इजलास अधिकृतः महेन्द्र पोखरेल

कम्प्युटरः भवानी ढुंगाना

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ११ गते रोज ५ शुभम् ।

१२

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव**, २०६१ सालको रिट नं. ३२३०, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश समेत, *रामप्रकाश श्रेष्ठ वि. अजय श्रेष्ठ समेत*

पुनरावेदन तहवाट शुरु अदालतको अधिकारक्षेत्र ग्रहण गरी शुरु अदालतले कुनै वुझ्न पर्ने प्रमाण नबुझी फैसला गरेको देखिएमा पुनरावेदन अदालत आफैले नबुझेको प्रमाण समेत बुझी फैसला गर्नसक्ने हुँदा साधारण अधिकारक्षेत्रअन्तर्गत पुनरावेदन एक सशक्त र प्रभावकारी कानूनी उपचार हो । यस्तो अवस्थामा निवेदकको मागको सम्बन्धमा प्रभावकारी उपचारको व्यवस्था हुनुको साथै निवेदकबाट उक्त व्यवस्थाको अवलम्वन गरी पुनरावेदन अदालतमा मुद्दा विचाराधीन रहेकाले प्रस्तुत रिटको औचित्य समाप्त भैसकेको हुँदा प्रस्तुत रिटको तथ्यभित्र प्रवेश गरी न्याय निरुपण गरिरहन नपर्ने ।

इजलास अधिकृतःउपेन्द्रप्रसाद गौतम

कम्प्युटरः सुदिप पंज्ञानी

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २५ गते रोज ५ शुभम् ।

१३

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव**, २०६४ सालको दे.पु.नं. ५५१, निषेधाज्ञा, *भवानीशंकर आचार्य समेत वि.जिल्ला वन कार्यालय सोलुखुम्वु समेत*

यसै जग्गाको सम्बन्धमा परेको उत्प्रेषणको रिट विचाराधीन भएकाले सोही रिटमा फैसला हुँदाका वखत दावीका जग्गाका विषयमा ठहरेबमोजिम हुने नै हुँदा यस निषेधाज्ञा मुद्दाबाट केही गरिरहनु नपर्ने ।

इजलास अधिकृतःमहेन्द्रप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटरः निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ११ गते रोज ५ शुभम् ।

१४

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या. श्री अवधेशकुमार यादव**, २०६४ सालको दे.पु.नं. CI-०४९७, परमादेश, *शान्तिदेवी यादव वि.चन्द्रदेवी प्रा.वि. डोकहा वंगडिया समेत*

कानूनी उपचार माग गर्दा उपयुक्त प्रक्रिया अवलम्वन गर्नुपर्ने हुन्छ । उपयुक्त प्रक्रियाको अभावमा कानूनी उपचार प्राप्त हुन सक्तैन । कुनै निकायबाट कानूनबमोजिम गर्नुपर्ने काम कारवाही वा निर्णय गर्न गराउन काम सम्पन्न नहुँदै परमादेशको रिट निवेदन दिनुपर्ने हुन्छ । काम सम्पन्न भैसकेको अवस्थामा परमादेश जारी हुन नसक्ने ।

इजलास अधिकृत:महेन्द्रप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटरः सुदिप पंज्ञानी

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ११ गते रोज ५ शुभम ।

१५

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या. श्री गिरीशचन्द्र लाल**, २०६६ सालको रिट नं. WH ००५४, बन्दी प्रत्यक्षीकरण, *कृष्णलाल श्रेष्ठको तर्फवाट भीमबहादुर श्रेष्ठ वि. महानगरीय प्रहरी वृत्त वौद्ध समेत*

निवेदकलाई केही सार्वजनिक (अपराध र सजाय) ऐन, २०२७ को कसूरमा प्रहरीहरूलाई आफ्नो काम गर्न वाधा व्यवधान सिर्जना गरेको भन्ने आरोपमा अनुसन्धानको लागि सरकारी मुद्दा सम्बन्धी ऐन, २०४९ को व्यवस्थाबमोजिम मुद्दा हेर्ने अधिकारीको आदेशले अनुसन्धानको लागि हिरासतमा राखेको भन्ने देखिएकाले निवेदकको थुना न्यायिक हिरासत मान्नु पर्ने ।

केही सार्वजनिक (अपराध र सजाय) ऐन, २०२७ अन्तर्गतको मुद्दा अभियोगपत्र दायर गर्नासाथ Bailable offence भएको हुँदा यस प्रकारका अपराधको अनुसन्धानको क्रममा अनुसन्धानको लागि आवश्यक अवधिमात्र हिरासतमा राख्नु पर्दछ । यस प्रकृतिका सबै मुद्दामा अनुसन्धान गर्नुपर्दा पूरा अवधि थुनामा राख्नु पर्दछ भन्ने आशयबाट कोही पनि ग्रसित हुन नहुने ।

इजलास अधिकृतः विष्णुप्रसाद उपाध्याय

कम्प्युटरः वेदना अधिकारी

इति संवत् २०६७ साल वैशाख १० गते रोज ६ शुभम्

१६

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या. श्री गिरीशचन्द्र लाल**, २०६६ सालको रिट नं. WO-००३७, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश समेत, *कुलबहादुर लिम्बू वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत*

निगम ऐनले सञ्चालक समितिको अधिकार वा निगमले गर्ने काम एकै पटक दुई अधिकारीमा केन्द्रित हुनसक्ने व्यवस्था नगरेको हुँदा कार्यकारी अध्यक्ष र महाप्रवन्धक दुवै कार्यकारी प्रमुख भएको भन्न नमिल्ने ।

निगम जस्तो autonomus corporation सञ्चालनमा हवाइ सेवा सञ्चालनमा अनुभवी र व्यवस्थापन एवं पर्यटन व्यवसाय तथा प्रशासनसम्बन्धी व्यवसायसँग परिचित व्यक्तिहरू भएको सञ्चालक समिति गठन हुन आवश्यक हुन्छ र सञ्चालक समितिले team spirit मा कार्य गर्नुपर्ने ।

सञ्चालक समितिको गठन गर्न अधिकार पाएको सरकारले हाम्रो मान्छेको Syndrome बाट मुक्त भई राम्रो मान्छे नियुक्ति गर्नुपर्ने आफ्नो संवैधानिक कर्तव्यलाई ध्यानमा राखेर सही मान्छे नियुक्ति गर्नुपर्ने ।

इजलास अधिकृतः उपेन्द्रप्रसाद गौतम

कम्प्युटरः सुदिप पंज्ञानी

इति संवत् २०६६ साल फागुन २८ गते रोज ६ शुभम

१७

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल**, २०६६ सालको रिट नं. WO-००३७ (निवेदन नं.५८८३), उत्प्रेषण समेत, *कुलबहादुर लिम्बू वि. सञ्चालक समिति नेपाल वायुसेवा निगम समेत*

नेपाल वायुसेवा निगम ऐन, २०१९ को दफा ६(२) अनुसार महाप्रवन्धकको काम कर्तव्य र अधिकार सञ्चालक समितिले तोक्ने व्यवस्था भएको तर निगमको सञ्चालक समितिको वैठकको निर्णयबाट सञ्चालक समितिले नतोकी केवल कार्यकारी अध्यक्ष एक व्यक्तिले प्रत्यायोजन गरेको काम र अधिकार प्रयोग गर्ने गरी तोकेको भन्ने देखिएकाले उक्त प्रत्यायोजनमा उल्लिखित ऐनको दफा ६(२) र ७(२) बमोजिम भएको नदेखिएकाले निगमलाई सुचारु रुपले सञ्चालन गर्न अव

महाप्रवन्धकको काम कर्तव्य र अधिकार सञ्चालक समिति आफैले स्पष्ट रुपमा महाप्रवन्धकको पदीय मर्यादा र जिम्मेवारीअनुसार तोक्नु भनी नेपाल वायुसेवा निगम सञ्चालक समितिको नाममा परमादेश जारी हुने ।

इति संवत् २०६६ साल चैत १ गते रोज १ शुभम

१८

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल**, २०६६ सालको रिट नं. WO-०१२७, प्रतिषेध उत्प्रेषणयुक्त परमादेश समेत, *कुलबहादुर लिम्बू वि. सञ्चालक समिति नेपाल वायुसेवा निगम समेत*

सेवा शर्तसम्बन्धी कानूनमा सरुवा र काजको व्यवस्था भएको हुन्छ । तर पदाधिकार नभएको निकायमा सरुवा र हाजिर गराउने भन्ने हुँदैन । काज र सरुवा सेवाको शर्तकै एक शर्तअन्तर्गतको शर्त हो । तर काम नतोकी विना माग र उद्देश्य अर्को कार्यालयमा हाजिर गराउने सेवाको शर्त होइन र हुन नसक्ने ।

मन्त्रिपरिषद् वा मन्त्री कार्यकारी अधिकारसम्पन्न र नीतिगत निर्णय गर्न सक्षम भए पनि मन्त्रिपरिषद्ले वा मन्त्रीले गर्ने निर्णय कानूनअनुकूल, तर्कसंगत, जायज मनासिव र कारणले समर्थित हुनुपर्दछ । यदि मन्त्रिपरिषद्को वा मन्त्रीको कुनै निर्णयलाई समर्थन गर्ने कानूनी आधार छैन भने त्यस्तो निर्णय यस अदालतसमक्ष संवैधानिक परीक्षण हुँदा अड्न नसक्ने ।

कानूनी शासनमा सरकार वा अन्य कुनै अधिकारीको स्वेच्छाचारी निर्णयको कुनै स्थान नहुने । Autonomus body को महाप्रवन्धक जो सञ्चालक समितिको अभिन्न सदस्य हो उसको भूमिका महत्त्वपूर्ण हुन्छ । महाप्रवन्धक Corporation को नीति निर्माता सञ्चालक समिति र corporation को अन्य अंगबीच सम्पर्कको माध्यम बन्छ, Corporation को महाप्रवन्धक "A hyphen which joins a buckle which fastens the policy making part of the corporation to the implementation part" भन्न सकिन्छ । यस्तो महत्त्वपूर्ण पदलाई पदाधिकार नभएको मन्त्रालयमा हाजिर गराउने भन्ने निर्णय अधिकारविहीन निर्णय मानिने ।

इजलास अधिकृतः उपेन्द्रप्रसाद गौतम

कम्प्युटरः सुदिप पंज्ञानी

इति संवत् २०६६ साल फागुन २८ गते रोज ६ शुभम्

१९

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल**, २०६६ सालको रिट नं. WO-०१२८, प्रतिषेध उत्प्रेषणयुक्त परमादेश समेत, *कुलबहादुर लिम्बू वि. सञ्चालक समिति नेपाल वायुसेवा निगम समेत*

छाडा र अनुशासनहीन गतिविधि कुनै पनि संगठन वा निकायलाई मान्य हुँदैन । सजाय गर्नुपर्दा अख्तियारवालाले आवेश (Whim) मा आएर वा स्वेच्छाचारी भएर कारवाही गर्न सक्दैन । अख्तियारवालाले प्रयोग गर्ने सेवा शर्तसम्बन्धी कानून Fair play बाट निर्देश हुनुपर्ने ।

कर्मचारीको Dignity राख्न कानूनमा अन्यथा व्यवस्था भएको वाहेक नियुक्ति गर्ने अधिकार पाएको अधिकारीभन्दा तलको अधिकारीले विभागीय कारवाही गर्न नसक्ने ।

नियुक्ति गर्ने भन्दा तल्लो तहका अधिकारीबाट स्पष्टीकरण माग गर्न नपाउनेमा मन्त्रीले स्पष्टिकरण मागेकोबाट अधिकारक्षेत्रको अभाव भएको कारण उक्त स्पष्टीकरण माग गैरकानूनी हुने ।

इजलास अधिकृतः उप्रेन्द्रप्रसाद गौतम

कम्प्युटरः सुदिप पंज्ञानी

इति संवत् २०६६ साल फागुन २८ गते रोज ६ शुभम

२०

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल**, २०६३ सालको रिट नं. WO-०६२५, उत्प्रेषण समेत, *दीर्घनारायण रेग्मी वि. श्रम तथा यातायात व्यवस्था मन्त्रालय समेत*

आफ्नो स्वेच्छाले राजीनामा गरी सेवाबाट बाहिरिने व्यक्तिले नेपाल यातायात संस्थान विघटन भएका कारण अवकाशमा परेका कर्मचारी सरह भएको भनी दावी गर्ने र सोअनुसारका कर्मचारीहरूले पाए

सरहका सुविधाहरू प्राप्त गर्नुपर्दछ भन्ने कुनै पनि कानूनी तथ्यगत आधार रहेभएको देखिन नआउने ।

निवेदकले स्वेच्छिक अवकाश लिँदा तत्काल प्रचलित कानून, नियम, विनियम एवं निर्णय अनुसारका सुविधा पाएको कुरालाई स्वयं स्वीकार गरेको र स्वेच्छिक राजीनामा दिँदा पाउने सुविधा आफ्नो स्वेच्छाले लिई पाइसकेको अवस्थामा हाल आएर अन्य वर्ग वा समूहले पाए सरहका सुविधा दावी गर्न मिल्ने अवस्था नै छैन । अन्य वर्ग वा समूहका व्यक्तिले अन्य प्रयोजन वा कार्यविशेषका आधारमा पाएको सुविधा दिन आफूलाई बञ्चित गरिएको कार्य समानताको सिद्धान्तविपरीत भएको भन्ने निवेदन दावी निरर्थक र औचित्यहीन देखिने ।

इजलास अधिकृतः नारायण रेग्मी

कम्प्युटरः सुदिप पंज्ञानी

इति संवत् २०६६ साल माघ १२ गते रोज ३ शुभम् ।

२१

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल**, २०६२ सालको रिट नं. WO-३०३६, उत्प्रेषण परमादेश, *मनिपाल एजुकेशन एण्ड मेडिकल ग्रुप (नेपाल) लि. वि. एकद्वार समिति, उद्योग विभाग समेत*

कुनै विदेशी लगानीकर्तालाई विभिन्न सुविधा दिने शर्त राखी संझौता गरी विदेशी लगानीकर्ताले नेपालमा लगानी गरेको भएमा संझौता अवधिभर सरकारले एकतर्फी रुपले त्यस्तो संझौता संशोधन गर्न वा भंग गर्न सक्दैन भने तोकिएको उद्योगहरूमा लगानी गरेमा दिइने सुविधा ऐनमा नै स्पष्ट तोकेको कारण विदेशी लगानीकर्ता आश्वस्त भई लगानी गरेपछि त्यस्तो सुविधा दिन्न भनी सरकारले इन्कार गर्न सक्दैन । सरकार कानून एवं विवन्धन दुवैबाट बाँधिने ।

औद्योगिक व्यवसाय ऐन, २०४९ ले गरेको व्यवस्था हेरी ऐन लागू भएको मितिदखि ऐन संशोधन हुनु अगाडिसम्मको अवधिभित्र भए गरेको काम कारवाही उक्त ऐनअन्तर्गत रहेर गरेको मानिन्छ । प्रत्येक सार्वभौम राष्ट्रको तीनै अंग विधायिका, कार्यपालिका र न्यायपालिका सार्वभौम हुन्छन् । राष्ट्रका ती सार्वभौम अंगहरू आफूमा भएको अधिकार प्रयोग गर्न सक्षम हुन्छन् । विधायिकी अधिकार अन्तर्गत सार्वभौम संसदले समाजको आवश्यकताअनुसारको कानून बनाउन सक्छ । बनाएको कानूनलाई संशोधन, खारेज गर्नसक्छ । कानून निर्माण, संशोधन, र खारेजी यी तीनै कुराहरू सार्वभौमसत्ता अर्थात् Sovereignty को एक identity हुन । सार्वभौमसत्ता सम्पन्न राष्ट्रले कानून बनाई लागू गरी पुनः त्यसलाई खारेज गर्न सक्छ । प्रत्येक राष्ट्रलाई यो अधिकार Sovereignty ले प्रदान गर्ने ।

इजलास अधिकृतः महेन्द्रप्रसाद पोखरेल

कम्प्युटरः निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक २३ गते रोज २ शुभम्

२२

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी.र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की**, २०६२ सालको दे.पु.नं. ८१९४, खिचोला मेटाई चलन, *सुरेन्द्रलाल चित्रकार वि. वृद्धिरत्न चित्रकार*

वादी दावी स्थापित हुने नहुने निर्णयमा पुग्नुपर्ने मूल आधार मानिएको नक्सा मुचुल्का नै रीतपूर्वकको नभएको अवस्थामा सोही नक्सालाई आधार मानी फैसला गरेको आफैमा त्रुटिपूर्ण हुने ।

वादी दावीमा प्रवेश गरी वादी दावी स्थापित हुने नहुने कुराको निरुपण नै नगरी भएको पुनरावेदन अदालतको फैसला कानूनअनुरूपको देखिन आएन । यसका साथै खिचोला गरेको भन्नेसम्म ठहर गरी चलनतर्फ हुने र गर्ने भन्ने सम्बन्धमा केही उल्लेख नै नगरी भएको फैसलालाई पूर्ण र परिपक्व निर्णय भनी मान्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृतः नारायण रेग्मी

कम्प्युटरः निर्मला भट्ट

इति संवत् २०६६ साल पुस २१ गते रोज ३ शुभम ।

२३

**मा.न्या.श्री बलराम के.सी. र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती**, २०६१ सालको रिट नं. ०६४-WO-३२१८, उत्प्रेषण समेत, *कन्सेप्ट फर्मास्यूटिकल (नेपाल) प्रा.लि.वि. दरोगाप्रसाद कुर्मी समेत*

विपक्षी दरोगाप्रसाद कुर्मीले २४० दिनभन्दा बढी अवधि रुजु हाजिर रही कम्पनीमा काम गरेको प्रमाणित भएकाले विपक्षी दरोगाप्रसादलाई कम्पनीको सेवामा नियुक्ति दिई लगातार २४० दिन भन्दा बढी अवधि काममा लगाएको देखिँदा कार्यक्षमता र इमानदारी नभएको भन्ने नदेखिनुका साथै निजका विरुद्ध निजको Supervisor लगायत सम्बद्ध अधिकारीको negative adverse remark समेत नभएको र २४० दिन लगातार रुजू हाजिर रही काम गरेको देखिएकाले निजको अव कम्पनीमा स्थायी हुने हक सिर्जना हुने ।

इजलास अधिकृतः विष्णुप्रसाद उपाध्याय

इति संवत् २०६६ साल माघ १९ गते रोज ३ शुभम ।

## इजलास नं. ३

१

**मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल**, २०६४ सालको दे.पु.नं. ०२५३, अंश, *कलावतीनाथ वि. जैदेव नाथ*

प्रमाण ऐन, २०३१ को दफा ६(क) को सगोलका अंशियारमध्ये जसका नाउंमा रहेको भए पनि त्यस्तो सम्पत्ति सगोलको हुने भन्ने कानूनी व्यवस्था र पुनरावेदिकाले आफूले जग्गा प्राप्त गरेको सयममा छुट्टी भिन्न भई अंशवण्डा भएको भनी जिकीर लिन नसकी अंशबण्डा भएको नदेखिई सगोलमै रहे भएको देखिए समेतको अवस्थालाई हेर्दा पेटवोलीबाट वुझिएका यी पुनरावेदिकाको नाउँमा रहेको जग्गासमेत सगोलकै देखिन आउँछ । सगोलमा रहेको समयमा सगोलमा रहेका परिवारका कुनै पनि सदस्यको नाउमा आर्जन गरेको यस्ता सम्पत्ति निजको निजी नभई सगोलकै र वण्डा हुने सम्पत्तिमै पर्ने ।

इजलास अधिकृतः कृपासुर कार्की

इति संवत् २०६६ साल असोज २१ गते रोज ४ शुभम

२

**मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री अवधेशकुमार यादव**, २०६१ सालको दे.पु.नं. ८४०७, बाटो कायम गरी निकास खोली पाऊँ, *भीमबहादुर खुपा श्रेष्ठ वि. प्रेमबहादुर खुपा श्रेष्ठ*

घर बनाउनेको ३ नं. मा अघिदेखि चलिआएको वा दिइआएको ठाउँको निकास कसैले थुन्न हुँदैन भन्ने उल्लेख भएको अवस्थामा मिसिल संलग्न नक्सा सर्जमिन लगायतका प्रमाणहरूले पुनरावेदकको दावी समर्थित भएको अवस्थामा उक्त घरबनाउनेको ३ नं. बमोजिम साविकदेखि प्रयोग गरिआएको वाटो र निकासको रुपमा रहेको ढोकालाई वन्द गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृतः कृपासुर कार्की

इति संवत् २०६६ साल कात्तिक २४ गते रोज ३ शुभम्

३

**मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ**, २०६३ सालको रिट नं. ०१६६, उत्प्रेषण, *बालकिशोर राय यादव वि. सोनियादेवी समेत*

रोक्का फुकुवा भएको जग्गा निजी आर्जनको हो भन्ने देखिएबाट त्यस्तो विवादित विषयमा सबूद प्रमाण बुझी निर्णय गर्नुपर्ने हुन्छ । रिट क्षेत्रबाट यस्ता विवादित विषयवस्तुमा सबूद प्रमाण बुझी निर्णय गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृतः नारायणप्रसाद दाहाल

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २१ गते रोज १ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ**, २०६३ सालको रिट नं. ३५२५, उत्प्रेषण, *अशेश्वर मरीक यादव वि. पाण्डव यादव समेत*

निवेदकले रिट निवेदनमा जिकीर लिएको विषय एकातिर हक वेहकको प्रश्नसँग जोडिएको अवस्था छ भने अर्कोतिर निवेदकको अंश हक जतिको जग्गाको डाक लिलाम बदर भै जग्गा समेत फुकुवा भैसकेको देखिएको स्थितिमा निवेदनमा उल्लेख गरेअनुरूप निजको संविधान तथा प्रचलित कानूनद्वारा प्रदत्त सम्पत्ति आर्जन गर्ने, भोग गर्ने, वेचविखन गर्ने तथा सम्पत्तिको अन्य कारोवार गर्न पाउने समेतको हक हनन् भएको नदेखिने ।

इजलास अधिकृतः नारायणप्रसाद दाहाल

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २१ गते रोज १ शुभम् ।

५

**मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री ताजिर अली अन्सारी**, २०६४ सालको रिट नं. १२२४, उत्प्रेषण समेत, *नीतुकुमारी समेत वि. परशुराम चौधरी समेत*

अरुको सम्बन्धमा ऐनले नै स्वास्नी, छोरी, बुहारीको दाइजो र विवाह नभएका छोराछोरीको विवाह खर्चलाई जायजात गर्ने प्रयोजनका लागि छुट दिएको अवस्थाबाट बिगो भरिभराउ गर्ने क्रममा जिल्ला अदालतले जायजात तायदातसमेतका प्रक्रिया अवलम्वन गर्दा विवाह खर्चबापत अलग गरी विगो भरी भराउको कार्य गर्नसक्ने अवस्था विद्यमान रहेको देखिन आउँदा रिट निवेदमा उठाइएका माग सम्बन्धमा फैसला कार्यान्वयनका क्रममा दण्ड सजायको २६ नं. को कानूनी व्यवस्थाबमोजिम भएको आदेशमा चित्त नबुझे त्यस सम्बन्धमा कानूनी उपचार प्राप्त गर्ने हक रिट निवेदकहरूमा सुरक्षित रहने नै हुन्छ । यसरी प्रस्तुत विषय फैसला कार्यान्वयनको कार्यसँग सम्वन्धित भएको र त्यसतर्फ कानूनी प्रक्रियाबमोजिम हुने नै हुँदा मागबमोजिम आदेश जारी गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृतः कृपासुर काकी
कम्प्युटरः नम्रता वास्तोला
इति संवत् २०६६ साल साउन १८ गते रोज १ शुभम्

६

**मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल**, २०६६-WO-०४०४, उत्प्रेषण, *तीर्थराज ढकाल वि. राधा के.सी. समेत*

लेनदने व्यवहारको ९ नं. को व्यवस्थाले निवेदकको धनमा ऋणीको हक नपुगेसम्म साहूले सो धनमा समाउन पाउने देखिँदैन । बण्डाबाट ऋणीको हक कायम नभएसम्म वा वण्डा नछुट्टिएसम्म सगोलको धन, जेथा जग्गाबाट विगो भराउ गर्न नमिल्ने ।

द.स. को २६ नं. को व्यवस्थाअनुसार दुनियाको बिगोबापत जायजात गर्दा त्यो धन खाने बाह्र वर्षदेखि माथिका ऐनबमोजिम मानु नछुट्टिई सँग वसेका वा त्यो धन खाँदा सँग बसेका पछि भिन्न हुनेको अंश समेत जायजात गर्नुपर्ने कानूनी व्यवस्था रहेकोले यो व्यवस्थालाई लेनदेन व्यवहारको ८ र ९ नं. को कानूनी व्यवस्थासँग गाँसी हेर्नुपर्ने हुन्छ यस्तो अवस्थामा द.स. को २६ नं. लाई अलग्गै (Seperately) हेर्न मिल्दैन । ऐनको मनसाय पनि त्यो होइन । अर्थात छोराले लिएको ऋण रकम लिखतमा मञ्जूरी वा साक्षी नबसेका वावुको गोश्वारा धनबाट असूल गर्नेतर्फ लेनदेन व्यवहारको ८ र ९ नं. को विपरीत हुने गरी व्याख्या गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृतः महेन्द्रप्रसाद पोखरेल
कम्प्युटरः सुदिप पंज्ञानी
इति संवत् २०६६ साल माघ २५ गते रोज २ शुभम् ।

७

**मा.न्या.श्री तपबहादुर मगर र मा.न्या.श्री गिरीशचन्द्र लाल**, २०६३ सालको दे.पु.नं. ०४६३, लिखत दर्ता, *अनरजीत हरिजन वि. झब्बालाल कहार*

आफ्नो मञ्जूरी नभएको आफ्नो अंश भाग लाग्ने सगोलको राजीनामाबाट विक्री भएको जग्गाउपर कानूनले निर्दिष्ट गरेको हदम्यादभित्र सरोकारवाला अंशियार अदालतमा प्रवेश नगरेको अवस्थामा सो हदम्याद नाघी परेको फिरादबाट निजको फिराद माग दावीबमोजिम इन्साफ गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृतः कृपासुर कार्की
कम्प्युटरः नम्रता बास्तोला
इति संवत् २०६६ साल मंसिर १५ गते रोज २ शुभम् ।

## इजलास नं. ४

१

**मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला**, २०६५ सालको रिट नं.WO-०७०९, उत्प्रेषण परमादेश समेत, *इन्हुरेड इन्टरनेशनल समेत वि. राष्ट्रपति डा. रामवरण यादव राष्ट्रपतिको कार्यालय समेत*

**मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्माको रायः**

कुनै विवाद सार्वजनिक हक वा सरोकारको हो वा होइन भन्ने कुराको निर्णय त्यो विवाद सर्वसाधारण जनताको वा कुनै जनसमुदायको सामूहिक हक वा सरोकारसँग सम्बन्धित छ वा कुनै खास व्यक्ति वा व्यक्तिहरूको हक वा सरोकारसँग मात्रै सम्बन्धित छ भन्ने आधारमा गर्नुपर्ने ।

सार्वजनिक सरोकारका सबै विवादहरू अदालतबाट निरुपण हुन सक्दैनन् । त्यस्ता विवादहरूमा संवैधानिक वा कानूनी प्रश्नहरू समेत समाहित भै अदालतले तिनको एउटा निश्चित समाधान गर्नुपर्ने अवस्था पनि छ भने मात्रै सार्वजनिक सरोकारको रुपमा आएको कुनै विवाद न्याययोग्य हुन सक्दछ । सार्वजनिक सरोकारको विषय भएपनि त्यस्तो विवाद विशुद्ध राजनीतिक प्रक्रिया वा राजनीतिक तरिकाबाट समाधान हुने प्रकृतिको छ भने त्यस्तो विवादलाई सार्वजनिक सरोकारको विवादको रुपमा अदालतमा प्रवेश गराउनु र अदालतबाट ग्रहण गरिन समेत नहुने ।

न्यायिक निरोपणका लागि अदालतमा प्रस्तुत गरिने विवाद काल्पनिक वा अनुमानित नभएर यथार्थमा आधारित एवं अदालतबाट निरुपण हुनसक्ने प्रकृतिको पनि हुनुपर्छ । केवल बौद्धिक उत्सुकता, जिज्ञासा वा चासोको समाधान गर्नु मात्र सार्वजनिक सरोकारका विषयमा हकदैयालाई उदार राख्नुको अर्थ हुन सक्दैन । अदालतले कानून वा संविधानमा आधारित भई विवादको निरुपण गर्दछ । न्यायिक निरुपण हुन नसक्ने वा गर्न नपर्ने सामाजिक, राजनीतिक, बौद्धिक वा त्यस्तै किसिमका सार्वजनिक सरोकारका अन्य विवादहरूमा संविधानको धारा १०७ को उपधारा (२) अन्तर्गत यस अदालतले हस्तक्षेप गर्न नमिल्ने ।

सार्वजनिक सरोकारको विषय भनी अदालतमा प्रवेश गर्न पाउने व्यवस्था रहनुको मूल उद्देश्य अदालतले त्यस्तो विवादमा दिने निर्णय वा आदेशबाट सर्वसाधारणले न्यायको अनुभूति प्राप्त गर्न सकून भन्ने पनि हो । त्यस्तो विषयमा अदालतसमक्ष निवेदन लिई आउन पाउने हकदैया सम्बन्धित व्यक्ति वा सर्वसाधारण जो सुकैलाई प्राप्त हुन्छ । वास्तवमा जनसमुदाय वा सर्वसाधारण जनताको हित वा स्वार्थमा प्रतिकूल प्रभाव परेको छ र निवेदक निजी व्यक्तिगत मुद्दाको रुपमा नआई कुनै समुदाय वा सर्वसाधारण जनताको हित वा स्वार्थ रक्षा गर्ने हेतु वा धारणाले उपचारको लागि आएको छ भने त्यस्तो कुरा सार्वजनिक हक सरोकारको कुरा हुन जान्छ । यस्तो विवादमा कुनै संवैधानिक वा कानूनी प्रश्न समावेश भएको कारण न्यायिक बाहेक अन्य आधारमा त्यस्तो प्रश्नको सही निरोपण हुन नसक्ने अवस्था भएमा त्यस्तो विवाद सार्वजनिक सरोकारको रुपमा अदालतबाट समाधान वा निरोपण हुन सक्ने ।

सम्माननीय राष्ट्रपतिबाट सम्पन्न हुने सम्पूर्ण कामहरू मन्त्रिपरिषद्‌लगायतका निकाय तथा पदाधिकारीको सिफारिशमा र नेपाल सरकारको नामबाटै सम्पन्न हुने संविधानको संरचनागत व्यवस्थाबाट देखिन आएको हुँदा मुलुकको राष्ट्राध्यक्षको हैसियतमा सम्पादन गरिने त्यस्ता काम कारवाहीलाई संविधानको दायराभित्र पर्ने होइनन् भन्न नमिल्ने ।

संवैधानिक राष्ट्राध्यक्षलाई संविधानले दिएका अधिकार र कर्तव्यको पालना निजले स्वविवेकमा गर्ने नभई संविधानतःमन्त्रिपरिषद वा सम्वद्ध निकाय वा पदाधिकारीको सिफारिशबमोजिम गर्ने हुँदा त्यस्तो काम कारवाहीमा सम्वन्धित सिफारिशकर्ताले नै पूर्ण जवाफदेहिता वहन गर्नु पर्ने भएकोले सामान्यतः संवैधानिक राष्ट्राध्यक्षलाई त्यस्तो काम कारवाहीमा उन्मुक्ति प्राप्त हुने मान्यता छ । तर यसको अर्थ कुनै निकाय वा पदाधिकारीको सिफारिशविना राष्ट्राध्यक्षबाट भएको काम कारवाहीमा निजलाई उन्मुक्ति प्राप्त हुन्छ भन्न नहुने ।

वस्तुतः सम्माननीय राष्ट्रपतिले सम्पादन गर्ने कार्यहरू निजको कार्यालयमार्फत नै सम्पादन हुने हो । सम्माननीय राष्ट्रपतिको दैनिक कामकारवाहीमा प्रत्यक्ष सहयोग पुऱ्याउन

संविधानतः स्थापित राष्ट्रपतिको कार्यालयबाट मगाइएको लिखित जवाफ यथार्थमा राष्ट्रपतिबाटै मगाए सरह हुने र पदीय मर्यादा समेतलाई हेरी राष्ट्रपतिबाट व्यक्तिगत रुपमा लिखित जवाफ मगाउनुभन्दा राष्ट्रपतिको कार्यालयबाटै मगाउनु स्वस्थ, सहज एवं उचित हुने भई तदनुरुप प्राप्त लिखित जवाफलाई राष्ट्रपतिको न्यायिक उन्मुक्तिको अर्थमा लिइनु मनासिव हुँदैन । प्रस्तुत विवादमा पनि सम्माननीय राष्ट्रपतिबाट सीधै लिखित जवाफ नमगाएकै कारणले निजलाई न्यायिक उन्मुक्ति भएको भन्ने अर्थ गर्नु न्यायोचित हुन नसक्ने ।

संविधान आफैंमा राजनीतिक एवं कानूनी दस्तावेज भएको हुँदा संविधानद्वारा सृर्जित राष्ट्राध्यक्ष वा राष्ट्रपतिको काम, कर्तव्य र अधिकारहरू निःसन्देह रुपमै राजनीतिक र कानूनी वा संवैधानिक दुवै प्रकृतिका हुन्छन् । त्यसैले राष्ट्रपतिबाट भएको कुनै काम वा निर्णयको प्रकृतिको पहिचान गर्न त्यस्तो निर्णय वा काम कारवाही कस्तो पृष्ठभूमिमा भएको छ र त्यसबाट के परिणाम वा असर उत्पन्न हुन्छ भन्ने हेर्नु जरुरी हुन्छ । राष्ट्रपतिका काम, कर्तव्य वा अधिकारसँग सम्बन्धित सबै विवादहरू राजनीतिक प्रश्नहरू नै हुन्छन् भन्ने अनुमान गरी त्यसमा निहित रहने संवैधानिक वा कानूनी प्रश्नसम्बन्धी विवादलाई अदालतमा प्रवेश गर्न नदिने वा जे जस्तो प्रकृतिको प्रश्नहरू भएपनि त्यसउपर अदालतले विचारै नगर्ने भन्ने दृष्टिकोण अपनाउन नमिल्ने ।

संक्रमणकालमा मुलुकमा भर्खरै संस्थागत हुन लागेको गणतन्त्रको धरोहर वा प्रतीकका रुपमा रहेको राष्ट्रपतीय संस्थाको संविधानको पालन र संरक्षण गर्नुपर्ने प्रमुख कर्तव्य सम्बन्धमा सार्वजनिक रुपमा उठाइएका विवादहरूको संवैधानिक र न्यायिक संबोधनबाट सो संस्थाप्रतिको जनविश्वास र आस्थालाई बलियो बनाउनमा मद्दत नै पुग्न जाने भई प्रारम्भिक अवस्थामा रहेको गणातन्त्रात्मक संवैधानिक विकासक्रमले स्थायित्व प्राप्त गर्ने अपेक्षा लिनु अस्वाभाविक नहुने ।

**मा.न्या. श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइरालाको राय**

सम्माननीय राष्ट्रपतिबाट साविकबमोजिम पदमा यथावत् निरन्तरता दिनु भनी निर्देश भएका तत्कालीन प्रधानसेनापति तथा मन्त्रिपरिषदको निर्णयले कायम मुकायम मुकरर भएका दुबैले हाल अवकाश प्राप्त गरिसकेको भन्ने देखिन्छ । त्यसैगरी प्रधानसेनापतिको पदमा हाल श्री छत्रमान सिंह गुरुङ्ग नियुक्त भै सकेको भन्ने देखिएको छ । यस स्थितिमा सम्माननीय राष्ट्रपतिबाट निर्देशपत्र दिइएकै कारणबाट मात्र सो निर्देशपत्र हालसम्म क्रियाशील रहिरहेको भनी मान्न नमिल्ने ।

संविधान र कानूनको अन्तिम व्याख्याताको हैसियतले यस अदालतले आफूसमक्ष पेश भएको विवादमा दिने निर्णयले विवादको समाधान गर्ने र एक निश्चित नजीर वा कानूनी सिद्धान्त समेत कायम गर्ने हुन्छ । त्यसका लागि यस अदालतमा ल्याइएको विवादको अस्तित्व यथावत् भई त्यसमा उठाइएको संवैधानिक वा कानूनी प्रश्नहरू पनि न्यायिक निरोपण गर्नुपर्ने औचित्य र प्रयोजन पनि हुनु पर्दछ । औचित्य र प्रयोजन नै समाप्त भैसकेको कुरामा अदालतले निर्णय दिइरहनु पर्ने अवस्था पनि पर्दैन । निवेदनमा उठाइएका प्रश्नहरू समाधान भैसकेका छन् भने विवाद नै नभएका कुरामा निर्णय निरोपण गरिरहनु पर्दैन भन्ने न्यायको स्थापित मान्यता वा सिद्धान्त रहेको छ । जुन समयमा जुन विषयमा विवाद उत्पन्न हुन्छ सोही समयमा त्यस विषयको निर्णय निरोपण गर्नुपर्ने ।

सम्माननीय राष्ट्रपतिबाट तत्कालीन प्रधानसेनापतिलाई साविकबमोजिम यथावत् निरन्तरता दिनु भनी दिइएको पत्र निर्देशसम्बन्धी कामकारवाही प्रस्तुत निवेदन दायर हुँदाको अवस्थामा कायम रहेको विषय तत्कालीन प्रधानसेनापतिले नै अवकाश पाएको समेत कारणबाट हाल निष्प्रयोजन भइसकेको र नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ को धारा १४४

को उपधारा (२) र (३) तथा सैनिक ऐन, २०६३ को दफा ११ को उपदफा (३) को तत्कालीन कानूनी व्यवस्थाबीच रहेको भनिएको अस्पष्टता वा असंगती समेत उक्त ऐनमा भएको संशोधनबाट हाल समाप्त भै प्रधानसेनापतिको अवकाशसम्बन्धी कामकारवाहीमा राष्ट्रपतिको भूमिकालाई विधायिकाले नै स्पष्ट गरिसकेको अवस्था छ । यसरी प्रधानसेनापतिको अवकाशसम्बन्धमा राष्ट्रपतिको संवैधानिक भूमिकाको स्पष्टताको निमित्त सैनिक ऐन, २०६३ को दफा ११(३) मा संशोधन भैसकेको अवस्थामा त्यसै विषयमा राष्ट्रपतिबाट दिइएको निर्देशपत्र समेत निष्प्रयोजित भैसकेको र भविष्यमा प्रयोग हुने संवैधानिक भूमिकाको खोजी गरिरहनु उचित पनि नहुने ।

माननीय न्यायाधीश श्री दामोदरप्रसाद शर्माबाट यस विषयमा पूर्णइलासबाट व्याख्या हुनु पर्ने भनी भएको आदेशसँग मेरो असहमति हुँदा सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०४९ को नियम ३(१)(क) बमोजिम प्रस्तुत निवेदनलाई पूर्ण इजलाससमक्ष पेश गर्ने ।

इजलास अधिकृत : गायत्रीप्रसाद रेग्मी

कम्प्युटर : नम्रता बास्तोला

इति संवत् २०६६ साल चैत ३१ गते रोज ३ शुभम्

२

**मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला**, २०६५ सालको WO-०९३२, उत्प्रेषण समेत, *सीमानाविहीन मानव अधिकार (ह्यूमन राइटस वीदाउट फ्रन्टियर्स, नेपाल) वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय*

**मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्माको रायः**

यसै लगाउको रिट नं. ०७०९ को यसै विषयसँग सम्बन्धित उत्प्रेषणयुक्त परमादेशको रिट निवेदन आज यसै इजलासबाट निर्णय हुँदा उक्त निवेदनमा अन्तर्निहीत रहेको संवैधानिक प्रश्नको निरुपण यस अदालतको पूर्ण इजलासबाट हुनुपर्ने भनी विस्तृत आधार सहित राय व्यक्त भई आदेश भएको र प्रस्तुत निवेदन समेत सोही निवेदनको लगाउको भई परस्पर अन्तर्प्रभावी भई एकैसाथ निर्णय हुनुपर्ने ।

**मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइरालाको रायः**

तत्कालीन मन्त्रिपरिषद्बाट तत्कालीन प्रधान सेनापतिलाई अवकाश दिने विषयमा भएको निर्णय नै हाल प्रयोजनहीन भैसकेको देखिएको भनी लगाउको रिट नं. ०६५-wo-०७०९ को उत्प्रेषणको निवेदनमा विस्तृत विश्लेषण भैसकेको र प्रस्तुत निवेदनमा समेत सोही रिटमा उठाइएको प्रश्न नै उठाइएको र मूल रिट निवेदन नै प्रयोजनहीन भएको भनी खारेज भैसकेको स्थितिमा थप विचार गरिरहनु नपर्ने ।

मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्माबाट प्रस्तुत निवेदन समेत पूर्ण इजलासबाट निरुपण हुनुपर्ने भनी अभिव्यक्त रायसँग मेरो असहमति रहेकाले सर्वोच्च अदालत नियमावली, २०४९ को नियम ३(१)(क) बमोजिम पूर्ण इजलासमा पेश हुने ।

इजलास अधिकृतः गायत्रीप्रसाद रेग्मी

कम्प्युटरः नम्रता वास्तोला

इति संवत् २०६६ साल चैत ३१ गते रोज ३ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या. श्री गिरीशचन्द्र लाल**, २०६३ सालको दे.पु.नं.CI-०७७७, सार्वजनिक धर्म कीर्ति संरक्षण, *कारी मण्डल समेत वि.मन्त्रिपरिषद् सचिवालाय समेत*

जग्गा जमीनलगायत सबै चल अचल सम्पत्तिको धनी वा स्वामी प्राकृतिक व्यक्ति वा कुनै संघ संस्था वा गुठी जस्ता कानूनी व्यक्तिहरू मात्र हुन सक्दछन् । सोबाहेक पोखरी आफैं धनी वा स्वामी हुन सक्ने अवस्था नहुँदा वादीको दावी विधिसम्मत तथा तर्कसंगत नदेखिदा पोखरी संरक्षण गर्ने जिम्मा पाऊँ भन्ने दावी पुग्न नसक्ने ।

इजलास अधिकृतः मातृकाप्रसाद आचार्य

कम्प्युटरः अमिररत्न महर्जन

इति संवत् २०६६ साल माघ ३ गते रोज १ शुभम् ।

यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा यसैअनुरूप निर्णय भएका छन्:

- २०६३ सालको दे.पु.नं.CI-०७७९, करारबमोजिम रकम दिलाई पाऊँ, *कारी मण्डल समेत वि. जीरेखन मुखिया विन*
- २०६३ सालको दे.पु.नं.CI-०७७६, करारबमोजिम रकम दिलाई पाऊँ, *कारी मण्डल समेत वि. जीरेखन मुखिया विन*
- २०६३ सालको दे.पु.नं.CI-०७७८, ठेक्का शून्य गरिपाऊँ, *कारी मण्डल समेत वि. सौखिलाल मण्डल समेत*
- २०६३ सालको दे.पु.नं.CI-०४६५, जालसाजी, *कारी मण्डल समेत वि. सौखिलाल मण्डल समेत*

४

**मा.न्या.श्री दामोदरप्रसाद शर्मा र मा.न्या.श्री सुशीला कार्की**, २०६३ सालको फौ.पु.नं. ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६९६ र ६९७, २०६४ सालको फौ.पु.नं. ००२४, भ्रष्टाचार, *शिवराज कडेल वि. अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग, गणेशप्रसाद पौडेल वि.अ.दु.अ.आ., कालीराम पौडेल वि. अ.दु.अ.आ., पहल थापा क्षेत्री वि. अ.दु.अ.आ., कमल मैनाली वि. अ.दु.अ.आ., रामशरण थापा वि. अ.दु.अ.आ, मीनबहादुर खत्री समेत वि.अख्तियार दुरुपयोग अनुसन्धान आयोग*

सामान वरामदकै अवस्थामा पेश हुन नसकेको आधारमा मात्र वेरीतको नरहेको भ्याट बिलले वैधता गुमाई प्रमाणयोग्य नरहेको भन्ने अर्थ गर्न न्यायिक दृष्टिकोणबाट औचित्यपूर्ण र उपयुक्त देखिदैन । अदालतले प्रमाण स्वरुप मिसिल संलग्न भ्याट विललाई प्रमाणको रोहमा मूल्याङ्कन गर्नुपर्ने नै हुन्छ । पछि पेश भएको बिल प्रमाणयोग्य हुन नसक्ने भन्ने अभियोग दावीलाई उचित ठहराएको विशेष अदालतको फैसला कानून एवं न्यायसंगत देखिन नआउने ।

वरामद भएका सामानहरू आफ्नो फर्मबाट प्राज्ञपनपत्रअनुरूप आयात भएका भनी प्रज्ञापनपत्र र भ्याट बिल (Vat Bill) समेत पेश गरी प्रतिवादीले सामान आफ्नो भएको स्वीकार गरिसककेको अवस्थामा उक्त समानहरू भन्सार चोरी पैठारी गरी ल्याएको र पेश भएका कागजात अन्यथा रहे भएको भनी प्रमाणित गर्ने भार अभियोग लगाउने वादी पक्षमा निहीत रहने हुँदा वादीले नै प्रमाणद्वारा पुष्टि गर्नु सक्नुपर्ने ।

कानूनको प्रयोग गर्दा कानूनी व्यवस्थाले लिएको निर्दिष्ट उद्देश्यको परिपूर्ति भएको छ कि छैन भनेर न्यायकर्ताले ख्याल राख्नुपर्ने हुन्छ । कानूनमा उल्लिखित कुनै पनि कार्यविधिगत प्रावधानको प्रयोग गर्दा कानूनबमोजिम नै गरिनुपर्छ । किनकि कानूनको वास्तविक पक्ष त्यसको कार्यविधिगत (Procedural part) कुरामा पनि अन्तर्निहीत रहेको हुन्छ । सोलाई उपेक्षा गर्न नमिल्ने ।

आपसमा बाझिई अविश्वसनीय रहेको एकमात्र बयानलाई अकाट्य प्रमाणको रुपमा ग्रहण गरी कसूर स्थापित गर्न न्यायोचित नहुँदा अभियोजन पक्षलाई अनुसन्धान अधिकारीसमक्ष भएको बयानबाट कुनै मद्दत पुग्नसक्ने देखिन नआउँदा अभियोग दावीबाट सफाई पाउने ।

इजलास अधिकृतः गायत्रीप्रसाद रेग्मी
कम्प्युटरः नम्रता वास्तोला
इति संवत् २०६६ साल माघ ६ गते रोज ४ शुभम ।

## इजलास नं. ४

१

**मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला**, २०६३ सालको दे.पु.नं. ५०४ र ००७५, शेषपछिको बकसपत्र लिखत बदर, *निर्मलप्रसाद यादव वि. संजय यादव, संजय यादव वि. रामवचन यादव समेत*

अड्डाबाट पारित कुनै लिखत सो अड्डाबाट नक्कल लिइसकेपछि आफ्नो हक जाने भएको वा अन्य कुनै अपराधिक कार्य भए गरिएको कुरा थाहा पाएकोमा त्यस्तो हक जाने भएको पक्षले सीधै सो सम्बन्धमा अदालतमा जालसाजी वा कीर्ते भनी नालेश दिन मिल्ने ।

कानूनबमोजिम पारित भएको कुनै लिखत वा अड्डा अदालत वा कार्यालयले स्रेस्ता वा

रेकर्डमा रहेको कुनै लिखतलाई अ.वं. ७८ नं. बमोजिम देखाउन सुनाउन पर्ने र सो देखे सुनेपछि मात्र सद्दे कीर्ते वा जालसाजी भनी भन्न नमिल्ने अवस्था हुँदैन । अड्डाबाट पारित लिखत पनि देखाई सुनाई मात्र दावी लिने भन्ने उक्त अ.वं. ७८ नं. को अर्थ र आशय रहेको पनि देखिँदैन । घरसारको कुनै लिखत भए मात्र सोलाई अ.वं. ७८ नं. बमोजिम अर्को पक्षलाई देखाउन सुनाउन पर्ने हुन्छ । विधवा स्वास्नीमानिसले दान बकस, राजीनामा, छोडपत्र लगायत कुनै प्रकारले आधी भन्दा बढी अचल सम्पत्ति हक छाडी दिनुपर्ने भएमा आफ्नो अंशियार हकवाला समेत रहेको छोराको मञ्जूरी लिई मात्र हक छाडी दिन पाउने ।

विधवा स्वास्नीमानिसले आफ्नो छोराको मञ्जूरीबिना आधा भन्दा बढी आफ्नो अंश हकको सम्पत्ति बकपत्र गरी हक छाडी दिन तत्काल प्रचलित स्त्री अंशधनको २ नं.समेतको कानूनी व्यवस्थाले मिल्ने हुँदैन । कानूनले नै गर्न नपाउने गरी निषेध गरेको कुनै कार्य कसैले गर्न हुँदैन र सो गरेमा अदालतबाट बदर घोषित गर्न सकिने ।

इजलास अधिकृतः गायत्रीप्रसाद रेग्मी

इति संवत् २०६६ साल पुस २२ गते रोज ४ शुभम्

२

**मा.न्या.श्री रामकुमार प्रसाद शाह र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती**, २०६३ सालको रिट नं. १२०८, प्रतिषेध, *मानबहादुर राई समेत वि. विष्णु सापकोटा समेत*

जबरजस्ती रुपमा गराइएको भनिएको मिति २०६४।३।११ को जुन कागजका सम्बन्धमा रिट निवेदन परेको हो, सोही कागजका सम्बन्धमा करकाप मुद्दा परी निर्णय समेत भइसकेको देखिँदा वैकल्पिक कानूनी उपचारको प्रयोग समेत भइसकेको देखिएको अवस्थामा नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ को धारा १०७(२) बमोजिम प्रस्तुत रिट निवेदन मागबमोजिमको आदेश जारी हुन नसक्ने ।

इजलास अधिकृतः श्रीप्रकाश उप्रेती

कम्प्युटरः सरस्वती पौडेल

इति संवत् २०६६ साल मंसिर १५ गते रोज २ शुभम्

## इजलास नं. ६

१

**मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या.श्री ताहिर अली अन्सारी**, २०६३ सालको रिट नं. ०२८७, उत्प्रेषण, *झुमादेवी मोक्तान वि. जिल्ला प्रहरी कार्यालय ललितपुर समेत*

निवेदकले कागज गराएको भने पनि यो यस्तो व्यहोराको कागज गराएको भन्न नसकेको साथै विपक्षी जिल्ला प्रहरी कार्यालयले पनि सम्झाई वुझाईसम्म गरेको तर निवेदनमा उल्लिखित कागज गराउने, डर, धम्की दिने लगायतका कार्य नगरेको भनी व्यहोरा लेखी लिखित जवाफ प्राप्त भएको तथा जबरजस्ती कागज गराएको भनी पेश हुन आएमा सोही वखत प्रश्न उठाई निवेदकले उजूर गर्नसक्ने नै हुँदा हाल कागज गरे गराएको कुरा नै इन्कार गरेको अवस्थामा मागबमोजिम आदेश जारी गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृतः भोलानाथ ढकाल

कम्प्युटरः धनबहादुर गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २५ गते रोज ५ शुभम् ।

२

**मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या. श्री ताहिर अली अन्सारी**, २०६४ सालको रिट नं. wo-०९९१, प्रतिषेध समेत, *मोहनकृष्ण शर्मा वि. शिवा शाह राणा समेत*

निवेदकले आफूलाई झुक्याउने लगायतका कार्य गरी आफ्नो हक अधिकारमा हस्तक्षेप हुने आशंका देखाएको अवस्था छ । यसरी विपक्षीले ठगीसम्बन्धमा उजूरी परी बुझेकोसम्म भनेको अन्य कारवाही गरेको भनी निवेदकले भन्न नसकेको स्थितिमा कारवाही नगर्नु भन्नुको औचित्य रहन्न । यदि विपक्षीहरूले गैरकानूनी कारवाही शुरु गरेको अवस्थामा कानूनी उपचार खोज्न निवेदक स्वतन्त्र रहने हुनाले मागबमोजिम आदेश जारी गरिरहनु नपर्ने ।

इजलास अधिकृतः भोलानाथ ढकाल

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २६ गते रोज ६ शुभम् ।

३

**मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या. श्री ताहिर अली अन्सारी**, २०६४ सालको रिट नं. wo-००७९, उत्प्रेषण समेत, *अमीतकुमार ठाकुर वि. शिक्षा तथा खेलकुद मन्त्रालय समेत*

दलित जातिमा समावेश गर्ने क्रममा राष्ट्रिय दलित आयोगले उपसमिति गठन गरी छानवीन समेत गरी आधिकारिक निकायले मधेसी मूलका लोहार जाति दलित होइन भनी भनेको अवस्थामा तथ्यमा प्रवेश गरी निर्णय गर्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृतः भोलानाथ ढकाल

कम्प्युरटः धनबहादुर गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २६ गते रोज ६ शुभम् ।

४

**मा.न्या.श्री कल्याण श्रेष्ठ र मा.न्या. श्री सुशीला कार्की**, २०६३ सालको रिट नं. ०२८७, परमादेश समेत, *नेपाल वातावरणीय कानून व्यवसायी संघ ( नेला) समेत वि. प्रधानमन्त्री तथा मन्त्रिपरिषद्को कार्यालय समेत*

माग गरिएका विषयमा पर्याप्त कानूनको विद्यमानताको अभाव देखिने, संक्रमित वर्गका समस्याहरू कल्पित नभै यथार्थ रुपमा गहिरिएको पाइने, अनि त्यस्ता विषयमा राज्यको तर्फबाट गर्नुपर्ने क्रियाकलापहरू नगरी समस्यालाई असम्बोधित रुपमा राख्ने कुराहरू सक्रिय शासन प्रणालीले अपेक्षा गरेका कुरा हुन सक्दैनन् । कार्यपालिकाले देशको समस्या समाधान गर्न संविधानको अधीनमा रही विभिन्न अङ्गसँग विधिसम्मत सम्बन्ध राख्नुपर्ने भए राखी समस्या समाधान गर्न उद्यत हुनुपर्दछ । कार्यपालिकालको प्रकृतिबाटै उसका कर्तव्य विधायिकी र न्यायिक उत्रदायित्वहरू छन् र कतिपय कुराहरूमा आवश्यकतानुसार उसले शासकीय गतिविधिहरूको आरम्भकर्ता र परिचालक हुनु पर्दछ । त्यस्तो रचनात्मक भूमिकाको उपेक्षा गरेर निवेदकले कानून बनाई उसको समस्या समाधान गर्न माग गरेको कुरालाई लिएर कानून बनाउने कुरा विधायिकाको एकलौटी विषय भनी आफ्नो भैरहेको दायित्व वा भूमिका कै पनि संकुचन वा उपेक्षा गरेको देखिन आउँछ, जुन उत्सहप्रद मान्न नमिल्ने ।

समाजभित्रै एक वर्गले विधिबाट प्राप्त सवै हकहरूको सार्वजनिक लाभको अवस्था भोगी विशिष्ट स्थितिमा रहने र जुन दीनहिन वर्गको लागि राज्य सामाजिक पद्धतिको सहयोगको आवश्यकता पर्ने हो, त्यही वर्गबाट त्यस्तो वर्गलाई चाहिएको वेला सवै सेवा सुविधाबाट च्युत भएर वस्नुपरेको अवस्था कानून, न्याय र सभ्यताको दृष्टिकोणले समेत सह्य हुन नसक्ने ।

एच.आइ.भी./ एड्सको कारणबाट उत्पन्न हुने मानव अधिकारको हनन्लाई रोक्नको लागि सरकारले उपयुक्त कानूनी व्यवस्था गर्न सकेको पाइँदैन । जनताको मानव अधिकारको रक्षा गर्ने दायित्व बोकेको सरकारले के कस्तो कानून बनाउने र कहिले बनाउने भन्ने कुराको एकलौटी अधिकार विधायिकाको मात्र भएको भनेर पन्छिन मिल्ने अवस्था हुँदैन । सरकारले मानव अधिकारसम्बन्धी विभिन्न अन्तर्राष्ट्रिय आलेखहरू तथा संविधानमार्फत व्यक्त गरेको प्रतिवद्धताअनुरूप जनताप्रतिको आफ्नो दायित्व निर्वाह गर्नुपर्ने ।

इजलास अधिकृतः शिशिरराज ढकाल

कम्प्युटरः धनबहादुर गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल वैशाख ३० गते रोज ४ शुभम्

## इजलास नं. ८

१

**मा.न्या.श्री गौरी ढकाल र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती**, २०६३ सालको दे.पु.नं. CI-०७३३, घर बहाल दिलाई घर खाली गरी खिचोला मेटाई पाऊँ, *जुगुतलाल यादव वि. भैजन ठाकुर समेत*

नाप नक्सा मुलुल्कामा उल्लिखित विवादित घर जग्गा आफूले राजीनामा पारित गरिलिएको र राजीनामाको कैफियत महलमा उल्लेख भएअनुरूप कि.नं. भित्रका घर जग्गा हुन् भन्ने दावी प्रमाणित हुनसक्ने ठोस र तथ्ययुक्त सबूद प्रमाण पेश गरी वस्तुनिष्ठ तवरले प्रमाणित

गर्न नसकेको अवस्थामा घर वहालमा वस्न दिएको भनी दावी गर्ने वादीले तत्सम्बन्धमा कुनै लिखत कवुलियतसमेत पेश गर्न नसकेकाले विवादित नंम्वरको घर जग्गालाई वादीले फिराद र राजीनामा लिखतमा उल्लिखित कि.नं. भित्रको घरजग्गा हो भन्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृतः हरिराज कार्की

इति संवत् २०६६ साल मंसिर १ गते रोज २ शुभम्

o यसै उगाउको २०६० सालको दे.पु.नं. ८७६२, घर उठाई जग्गा खिचोला चलन, *भैंजन ठाकुर समेत वि. रामनन्दन यादव* भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

## इजलास नं. ९

१

**मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला र मा.न्या. श्री रणबहादुर बम**, २०६० सालको दे.पु.नं.८१७५, अंश, *धर्मदाश अहिर वि. जगन्नाथ अहिर समेत*

प्रस्तत मुद्दाका प्रतिवादीहरू बीच अंश मुद्दा परी अंश पाई छुट्टि भिन्न भैसकेको प्रमाण मिसिलबाट देखिएको र निजहरू बीच अंश मुद्दामा भएको फैसलाउपर पुनरावेदक वादीले उजूर नालेससमेत गराएको भन्ने कुनै जिकीर लिन नसकेको र २०१३ सालमा दिएको अंश मुद्दासमेत वादीले तारेख नै छाडी मुद्दा डिसमिस फैसला भैरहेको समेतका व्यवहार प्रमाणबाट यी वादी र प्रतिवादीहरू पहिले नै छुट्टि भिन्न भैसकेको भन्नु र मान्नुपर्ने ।

इजलास अधिकृतः हरिराज कार्की

इति संवत् २०६६ साल मंसिर ७ गते रोज १ शुभम्

२

**मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला र मा.न्या.श्री रणबहादुर बम**, २०६० सालको दे.पु.नं.९४८२ हकसफा, *तेतरी चौधरी वि. सरोदेवी चौधरी समेत*

मोहीको मृत्युपश्चात् जोत कमोद गरिरहेको हक खाने हकवालाले कानूनले यति अवधिसम्म नामसारी गराई सक्नुपर्ने भनेको अवस्थामा सोही अवधिभित्र र अवधि नतोकेको अवस्थामा आफ्नो अनुकूलतम समयमा नामसारी गराई हक कायम गराउन सक्दछ । हक स्थिर रुपमा रहिरहेको अवस्थालाई त्यसको समाप्ति भनी मान्न नमिल्ने ।

प्रक्रियागत कार्यविधिले केही समयको लागि हक हस्तान्तरण हुन नसक्दा सोही कारणले हकवालाको हक गुम्न गएको भनी मान्न नसकिने ।

मोही हकको निरन्तरता देखिएको अवस्थामा नामसारी गराउन बाँकी रहेको आधारमा मात्र पुनरावेदकको हक समाप्त हुन सक्दैन । स्वयं जग्गाधनीले मोहीको रुपमा स्वीकार गरी मोही निष्काशनतर्फ कारवाही चलाएको तथा यिनै पुनरावेदकले मोही नामसारीको कारवाही चलाई मोही नामसारी गर्ने निर्णय समेत भैसकेको अवस्थामा मोही हक प्राप्त व्यक्ति होइन भनी अधिकारको समाप्ति गर्न कानून र न्यायको रोहमा युक्तिसंगत नदेखिने ।

इजलास अधिकृतः चन्द्रप्रकाश तिवारी

कम्प्युटरः शम्भु शाह

इति संवत् २०६६ साल माघ १२ गते रोज ३ शुभम्

३

**मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती**, २०६१ सालको दे.पु.नं.०१५६, मोही नामसारी, *किशोरीप्रसाद शर्मा वि. महेन्द्र राउत भूमिहार समेत*

लिखित रुपमा आचरण व्यवहारबाट प्रकट गरी प्रत्यक्ष रुपमा नै मोहीको अस्तित्वलाई स्वीकार गरिएको छ भने सो नै पर्याप्त आधार हो, लिखित रुपमा छुट्टै मोही पत्याएको कागज हुन अपरिहार्य नहुने ।

२०५३ सालमा भूमिसम्बन्धी ऐन, २०२१ को दफा २६(१) संशोधन भई सो संशोधनबाट नातिलाई सृजित मोहियानी हक सो भन्दा अघिदेखि उठेको विवादको विषयमा समेत लागू हुन्छ भन्न नमिल्ने ।

२०५३ सालमा भूमि सम्बन्धी ऐन, २०२१ को संशोधन हुनुपूर्वको स्थितिमा सोही ऐनको दफा २६(१) मा भएको संशोधनको सुविधा लिई

नातिलाई जग्गाधनीले मोही पत्याउन नमिल्ने नै देखिएको साथै जग्गाधनीले अघि पनि किशोरीप्रसाद शर्मासँग वाली कुत वुझ्ने मोही मुद्दा दिने, धरौटी बुझ्ने समेतका आचरणगत क्रिया गरिआएको देखिँदा मोही किशोरीप्रसाद शर्मालाई नै पत्याई मोही नामसारी गरी दिनुपर्ने ।

इजलास अधिकृतः दीपक ढकाल
इति संवत २०६६ साल माघ १७ गते रोज १ शुभम्
यसै लगाउका निम्न मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएका छन्:

- २०६१ सालको दे.पु.नं.८७७६, नामसारी फैसला बदर, *किशोरीप्रसाद शर्मा वि. विनोदप्रसाद शर्मा समेत*
- २०६१ सालको रिट नं. Wo-०६३५ उत्प्रेषणमिश्रित परमादेश, *हरिश्चन्द्र शर्मा वि. भूमिसुधार कार्यालय महोत्तरी समेत*

४

**मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला र मा.न्या. श्री भरतराज उप्रेती**, २०६१ सालको दे.पु.नं.९११७, जग्गा खिचोला घर हटाई चलन, *दुःखी साह गोठ वि. पतियादेवी थरुनी*

तथ्य र मिसिल संलग्न कागजातले एउटा कुराको सत्यता स्थापित गरिरहेको अवस्थामा सो सत्यलाई नजरअन्दाज गरी प्रतिवादीको भनाइलाई मात्र आधार मानी निष्कर्षमा पुग्न मिल्दैन । यसरी निर्णय निष्कर्षमा पुग्ने हो भने मिसिल संलग्न कागजातको प्रमाणिक अस्तित्व लुप्त प्रायः हुने ।

विपक्षी झिकाउने म्यादमा प्रतिवादी म्यादै गुजारी बसेको अवस्था समेतबाट थप प्रमाण बुझ्न पर्ने भनी हदम्यादको आधारमा खारेज गर्ने गरेको शुरु जिल्ला अदालतको फैसला बदर गरी पुनः इन्साफको लागि शुरु अदालतमा पठाउने पुनरावेदन अदालतको फैसला कानून तथा न्यायको रोहमा युक्तिसँगत नै नेखिने ।

इजलास अधिकृतः चन्द्रप्रकाश तिवारी
इति संवत् २०६६ साल पुस २६ गते रोज १ शुभम्

- यसै लगाउको २०६१ सालको दे.पु.नं.९११८ नापी निर्णय दर्ता बदर, *दुःखी साह गोठ वि. पतियादेवी थरुनी* भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

५

**मा.न्या.श्री राजेन्द्रप्रसाद कोइराला र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती**, २०६५ सालको रिट नं. ०२२९, उत्प्रेषण समेत, *गणेशजंग राणा समेत वि. श्रम तथा यातायात व्यवस्था मन्त्रालय समेत*

कानूनअनुसारको अधिकार प्रयोग गरी गरेको निर्णयउपर चुनौती दिन कानूनले स्पष्टतः सक्षम निकाय वा अधिकारीको व्यवस्था नगरी वैकल्पिक उपचारको मार्ग वन्द गरेको अवस्थामा सोको प्रभावकारी उपचारको लागि यस अदालतमा रिट क्षेत्रमार्फत अधिकार संरक्षण गर्न पाउने अधिकार प्रत्येक सरोकारवालालाई रहन्छ । तर त्यस्तो अधिकारको प्राप्तिको लागि निजलाई वैकल्पिक उपचारको मार्ग रहेको अवस्था देखिनु हुँदैन । वैकल्पिक उपचारको व्यवस्था रहेको र सो वैकल्पिक मार्गको अवलम्वन नगरी सीधै रिट क्षेत्रबाट उपचार प्राप्त गर्न सकिने अवस्था हुँदैन । कानूनी व्यवस्था निष्प्रयोजत हुने गरी उपचार प्राप्तिको अन्य मार्ग खुल्ला राख्न न्याय प्राप्तिका मान्य सिद्धान्तले समेत नमिल्ने ।

सवारी साधनको रुट इजाजत रद्ध गर्ने यातायात व्यवस्था कार्यालय वागमतीको निर्णय विरुद्ध ऐनको दफा १७१(१) मा उल्लिखित पुनरावेदकीय उपचारको प्रक्रियामा निवेदकहरू प्रवेश गरेको देखिएन । अन्य निकायको तोक आदेशको आधारमा निर्णय गरिएको अवस्थामा पनि प्रथमतः निर्णय गर्ने अधिकारी उपरको कानूनी उपचार कानूनमा निर्दिष्ट तरीकाअनुसार नै अवलम्वन गर्नुपर्ने ।

इजलास अधिकृतः चन्द्रप्रकाश तिवारी
इति संवत् २०६६ साल पुस २७ गते रोज २ शुभम्

- यस्तै प्रकृतिको संवत् २०६४ सालको रिट नं. ०५०७, उत्प्रेषण समेत, *गणेशजंग राणा समेत वि. श्रम तथा यातायात व्यवस्था मन्त्रालय समेत* भएको मुद्दामा यसैअनुरूप निर्णय भएको छ ।

६

**मा.न्या. श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय र मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा**, २०६४ सालको फौ.पु.नं. १९१, लागू औषध, *Parita Ratanam वि. नेपाल सरकार*

अदालतसमक्षको वयानमा प्रहरीमा भएको वयान आफूलाई नसम्झाई नवुझाई गराएको हो आफूलाई नेपाली र अंग्रेजी भाषा आउँदैन भनी लेखाई दिएकोमा पुनरावेदक प्रतिवादीले यस अदालतसमक्ष दायर गरेको पुनरावेदन पत्रमा परेका निजको सहिछापमा अंग्रेजी शव्दहरूको प्रयोग भएको देखिँदा अंग्रजी भाषाको ज्ञान नभएको भन्ने प्रतिवादीको अदालतसमक्षको वयान प्रथम दृष्टिमा नै विश्वासलायक नदेखिने ।

भै आएको वरामदी मुचुल्का, पुनरावेदक प्रतिवादीको वयान, वरामदी मुचुल्कामा रोहवरमा वस्ने व्यक्तिहरूको वकपत्र तथा परिस्थितिजन्य प्रमाण समेतको मिसिल संलग्न प्रमाणहरूबाट प्रतिवादी Parita Ratanam ले अभियोग माग दावीबमोजिमको कसूर गरेको पुष्टि हुन आएकोले निजलाई लागू औषध नियन्त्रण ऐन, २०३३ को दफा १४(१)(छ)(३) बमोजिम १५ वर्ष कैद र पाँच लाख जरीवाना हुने ।

इजलास अधिकृतः गायत्रीप्रसाद रेग्मी

कम्प्युटरः भवानी ढुंगाना

इति संवत् २०६६ साल असोज २८ गते रोज ४ शुभम्

७

**मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती**, २०६४ सालको रिट नं. ३३६६, उत्प्रेषण मिश्रित परमादेश, *विवेकराज सिँह राठौर वि. मन्त्रिपरिषद् सचिवालय समेत*

विभिन्न प्रशासनिक निकायबाट हुने तोक आदेशका भरमा व्यक्तिको हक स्वामित्व तथा कानूनी अधिकारको सिर्जना हुन नसक्ने सर्वविदित तथ्य भएकोमा २०२० सालमा वन सीमाना डिमार्केशनभित्र परेको तत्काल कानूनद्वारा निर्धारित उपचारको अवलम्वन गरी हक पुनःस्थापित गराउनु सक्नु पर्नेमा आफ्नो अधिकार तथा कर्तव्यप्रति मौकामा जागरुक वा सचेष्ट नभएका यी निवेदकलाई अन्ततः अदालत प्रवेश गरेको देखिँदा मौकामा आफ्नो अधिकारको उपभोगमा उदासीनता देखाई बस्ने यी निवेदकहरूलाई २०२० सालमा वन सीमाभित्र पारेको जग्गा सम्बन्धमा २०५९ सालमा आएर उपचार प्रदान गर्न विलम्वको सिद्धान्त समेतले सहयोग नगर्ने हुँदा निवेदकलाई असाधारण अधिकारक्षेत्रको दायरा भित्र समाहित गरी सहयोग गर्न नसकिने ।

इजलास अधिकृतः भोलानाथ ढकाल

कम्प्युरटः धनबहादुर गुरुङ

इति संवत् २०६६ साल मंसिर २१ गते रोज १ शुभम् ।

यसै लगाउ निम्न मुद्दाहरूमा यसैअनुरूप निर्णय भएका छन्:

- २०५९ सालको दे.पु.नं. ३०८०, उत्प्रेषणयुक्त परमादेश, *सीताराम काफ्ले वि. सहकारी विभाग* समेत
- २०६४ सालको दे.पु.नं.०८१७ जग्गा रोक्का फुकुवा, *सीताराम काफ्ले वि. सहकारी विभाग* समेत

८

**मा.न्या.श्री प्रेम शर्मा र मा.न्या.श्री भरतराज उप्रेती**, २०५४ सालको रिट नं. ३०३७, उत्प्रेषण, प्रतिषेध, *जगदीशप्रसाद अग्रवाल वि.कर कार्यालय हेटौडा समेत*

कम्पनीलाई आ.व. २०५०।५१ का लागि वियर उत्पादन गर्न मिति २०५०।५।९ मा दिइएको इजाजत पत्रमा तयारी माल उत्पादन गर्न प्रयोग हुने कच्चा मालको अनुपातको परिणाम उल्लेख गरेको नदेखिएको र निवेदक कम्पनीले सो आ.व.को अन्तशुल्क, अन्तशुल्क ऐन, २०१५ र अन्तशुल्क नियमहरू २०१९ बमोजिम बुझाइसकेको देखिएको अवस्थामा महालेखा परीक्षकको विभागबाट नियमित रुपमा हुने लेखा परीक्षण गर्दा प्रयोग भएको कच्चा माल र उत्पादन भएको तयारी मालको अनुपातलाई अनुमानित आधारमा वेरुजु औल्याएको र सो वेरुजूउपर सार्वजनिक लेखा समितिमा छलफल हुँदा सो समितिले उक्त वेरुजु देखाइएको रकम असूलउपर गर्नका लागि अर्थ मन्त्रालयलाई निर्देशन दिएको र सोही निर्देशनको आधारमा अर्थ मन्त्रालयले आफ्ना

मातहत विभाग एवं कार्यालयलाई पत्र लेखी असूल गर्न भनेको आधारमा मूल्य अभिवृद्धि कर कार्यालय हेटौंडाले मिति २०५३।१२।१२ मा निवेदक कम्पनीलाई रु.६०,६२,६५३।९३ असूलउपर गर्न पत्राचार गरेको कार्यलाई कानूनबमोजिम भएको कार्य भनी मान्न नमिल्ने ।

इजलास अधिकृतः श्रीप्रकाश उप्रेती

कम्प्युटरः रानु पौडेल

इति संवत् २०६६ साल पुस ७ गते रोज ३ शुभम्

९

**मा.न्या.श्री कृष्णप्रसाद उपाध्याय र मा.न्या.श्री प्रकाश वस्ती**, २०६१ सालको फौ.पु.नं. ३४४६ र ३४४८, ठगी, *दुर्गा उप्रेती वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. मदन शर्मा*

कृत्रिम लेटर प्याडमा नक्कली सरकारी छाप दस्तखत बनाउने कार्य, स्वीकृति नै प्राप्त नगरी विदेशी विनिमयको कारोवार गर्ने कार्य र बैंकलाई झुक्यानमा पारी ठग्ने तीन पृथक कानूनद्वारा व्यवस्थित तीन स्वतन्त्र कसूर हुन । समान प्रतिवादी भए भन्दैमा दोहोरो खतराको सिद्धान्त आकर्षित हुने होइन । कसूरका हकमा एकै पटकभन्दा वढी मुद्दा चलाइने र सजाय नगरिने नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ को धारा २४(६) ले समाहित गरको दोहोरो खतराको सिद्धान्त यहाँ विविध कसूर भएबाट एउटै कसूर हो भन्ने तर्कसँग सहमत हुन नसकिने ।

इजलास अधिकृतः सुदीप दंगाल

कम्प्युरटः रानु पौडेल

इति संवत् २०६६ साल पुस ६ गते रोज २ शुभम् ।

यसै लगाउका निम्न मुद्दाहरूमा यसैअनुरूप निर्णय भएका छन्:

- २०६१ सालको फौ.पु.नं. ३४४७, विदेशी विनिमय, *नेपाल सरकार वि. मदन शर्मा समेत*
- २०६१ सालको फौ.पु.नं. ३४४५ र ३४४९ सरकारी छाप दस्तखत कीर्ते, *दुर्गा उप्रेती वि. नेपाल सरकार, नेपाल सरकार वि. मदन शर्मा*

## सर्वोच्च अदालत गतिविधि

### सम्माननीय प्रधान न्यायाधीश श्री रामप्रसाद श्रेष्ठज्यूद्वारा पुनरावेदन अदालतका माननीय मुख्य न्यायाधीशहरुलाई पदबहालीको लगत्तै दिनु भएको निर्देशन

**माननीय मुख्य न्यायाधीश**
**पुनरावेदन अदालत**

नेपालको अन्तरिम संविधान, २०६३ बमोजिम जनताका हक अधिकारको रक्षा एवं प्रचलनका लागि छिटोछरितो निष्पक्ष तथा सर्वसुलभ न्याय सम्पादन गर्ने जिम्मेवारी न्यायपालिकामाथि रहेको कुरा विदितै छ । समाजको परिवर्तनशील स्वभाव, जनताका इच्छा र आकांक्षामा हुने वृद्धि, बदलिँदो विश्व परिवेश, सूचना प्रविधिको क्षेत्रमा भएको विकास जस्ता कुराहरूलाई वेवास्ता गरी न्याय सम्पादनको कार्य गर्न सम्भव छैन । यसको लागि उपलब्ध स्रोत र साधनको योजनावद्ध एवं उच्चतम् प्रयोग र परिचालन गरी समयमै न्याय प्राप्त गर्ने जनचाहनालाई सम्बोधन गर्न सक्नु आज न्यायपालिकाको सबैभन्दा ठूलो चुनौती हो । न्याय सम्पादनको जिम्मेवारी सम्हालेका हामी सबै न्यायकर्मीहरूले आफ्ना काम कारवाहीहरूलाई निष्पक्ष, स्वतन्त्र, पारदर्शी एवं विवादरहित तवरले सञ्चालन गरी जनताको न्याय प्राप्तिको चाहनालाई पूरा गर्नुपर्ने दायित्व पनि हो । यो दायित्व पूरा गर्न हाम्रा सामु विद्यमान रहेका

चुनौतीहरूको सामना गर्दै न्याय सम्पादनको कार्यलाई प्रभावकारी, निष्पक्ष, स्वतन्त्र एवं छितोछरितो रुपमा सम्पन्न गर्नका लागि देहायबमोजिम गर्नु गराउनु हुन यो निर्देशन दिएको छु:-

1= न्याय सम्पादनको कार्य संलग्न सम्पूर्ण न्यायकर्मीहरूको जिम्मेवारीबोध, नेतृत्व क्षमता, निष्पक्षता, पारदर्शिता, सदाचार एवं कार्यकुशलताबाट मात्र न्यायिक मर्यादाको संरक्षण हुने भई त्यसको प्रत्यक्ष प्रभाव न्याय सम्पादनको कार्यमा समेत पर्न जाने हुँदा न्यायकर्मीले यस कुरालाई सदैव मनन् गर्दै आफ्नो जिम्मेवारी बहन गरी गराई न्याय सम्पादनको कार्यमा समर्पित हुनु होला ।

2= न्याय सम्पादनको कार्यलाई योजनावद्ध छिटो छरितो एवं प्रभावकारी रुपमा सञ्चालन गर्ने सिलसिलामा न्यायपालिकाको प्रथम पञ्चवर्षीय रणनीतिक योजनाको निर्माण र कार्यान्वयनबाट हामीले हासिल गरेका उपलब्धि एवं सँगालेका अनुभवहरूको आधारमा न्याय सम्पादनको कार्यलाई अझ बढी प्रभावकारी, परिष्कृत एवं समयवद्ध रुपमा सञ्चालन गर्न न्यायपालिकाको दोस्रो रणनीतिक योजना (२०६६/६७-२०७०/७१) को तर्जुमा भई कार्यान्वयनमा रहेको व्यहोरा विदितै छ । उक्त योजनाले औंल्याएबमोजिम न्यायपालिकाको स्वतन्त्रता र स्वायत्ततालगायत न्याय प्रशासनका क्षेत्रमा रहेका ऐन नियमहरूमा समयानुकूल सुधार एवं परिमार्जन, सूचना प्रविधिको विकास र प्रयोगलगायतका क्षेत्रमा कार्य भइरहेको छ । सो योजनालाई आफ्नो तह र मातहतका जिल्ला अदालतसमेतबाट प्रभावकारी रुपमा कार्यान्वयन गर्ने सम्बन्धमा तयार गर्नु भएको कार्य योजनाअनुरूप न्याय सम्पादनको कार्यलाई सञ्चालन गर्नु गराउनु होला । साथै सो योजनाको सम्बन्धमा आफू मातहतका कर्मचारी, सम्बन्धित बार एकाई समेतसँग समय-समयमा छलफल गरी योजनाको विषयमा जानकारी संप्रेषण गरी न्याय सम्पादनको कार्यमा तीव्रता ल्याउनु होला ।

3= न्याय र कानूनको क्षेत्रमा दिनानुदिन विकसित भइरहेका नवीनतम् अवधारणा, सिद्धान्त एवं सर्वोच्च अदालतबाट प्रतिपादित भएका नयाँ नयाँ सिद्धान्तहरू समेतलाई न्याय सम्पादनको क्रममा जानकारी राख्नु र तिनको अनुशरण गरी न्याय सम्पादन गर्न सक्नु हरेक न्यायकर्मीको लागि अति आवश्यक छ । त्यसको लागि संस्थागत एवं व्यक्तिगत रूपमा समेत सूचना प्रविधि समेतको अधिकतम् उपयोग गरी अध्ययन, जानकारी आदान प्रदान एवं न्याय सम्पादनको क्रममा तिनको प्रयोग गर्नेतर्फ विशेष ध्यान दिनु होला ।

4= मुद्दाका पक्षको रुपमा रहेका बालक, बृद्ध, अशक्त, महिला र सामाजिक एवं आर्थिक रुपले पछि परेका वर्गको उचित कानूनी प्रतिनिधित्व गराई न्याय सम्पादन गर्नु हामी सबैको कर्तव्य हो । त्यसका लागि स्थानीय बार एवं वैतनिक कानून व्यवसायीबाट प्रतिनिधित्व गराई न्याय सम्पादन गर्नु गराउनु होला ।

5= सेवाग्राहीप्रति हामीले गर्ने व्यवहारबाट नै अदालतप्रतिको जनआश्था निर्धारण हुने हो । जसरी स्वस्थ्यकर्मीहरूले विरामीप्रति व्यवहार गर्दा देखाउने आत्मीयभाव, विनयशीलता र नम्रताबाट नै विरामीले आधा रोग निको भएको अनुभव गर्दछन्, त्यसरी नै हामी अदालतमा कार्यरत् न्यायाधीश तथा कर्मचारी सबैले शिष्टता, नम्रता तथा शालीनतापूर्बक न्यायका उपभोक्ताहरूको पीरमर्का सुनुवाइ गर्न सकेमा मुद्दाको कारण तनावमा रहेका उपभोक्ताहरूमा केही हदसम्म भए पनि राहतको अनुभव हुनेछ । त्यसैले अदालतहरूमा तदनुसारको कार्यशैलीको विकास गर्नु गराउनु होला ।

6= न्यायपालिकाको काम कारवाही छिटोछरितो, सर्वसुलभ, पहुँचयोग्य एवं जनअपेक्षाअनुरूप हुन नसक्नुमा विभिन्न विकृतिहरू कारक

तत्वको रुपमा रहेको भन्ने तथ्य विकृतिविहीन न्यायपालिकाको विकास अध्ययन कार्यदलद्वारा गरिएको अनुसन्धान प्रतिवेदन समेतबाट उजागर भएको छ । सो कार्यदलद्वारा त्यस्ता विकृति एवं कमी कमजोरीहरू हटाई न्याय सम्पादनको कार्यलाई अझ निष्पक्ष, छिटोछरितो, प्रभावकारी र जनअपेक्षाअनुरूप सञ्चालन गर्न तत्कालीन तथा दीर्घकालीन रुपमा गर्नुपर्ने नीतिगत, कानूनी, व्यवस्थापकीय र अन्य सुधारका क्षेत्रहरू समेत पहिल्याई आवश्यक सुझावहरू समेत पेश गरिसकेको स्थिति छ । उक्त प्रतिबेदन सर्वोच्च अदालतको वेवसाइटमा राखिएको छ । सो अध्ययन प्रतिवेदनको पूर्ण कार्यान्वयन गरी न्यायपालिकालाई विकृतिविहीन संस्थाको रुपमा विकसित गरी स्वतन्त्र न्यायपालिकाप्रतिको जनताको चाहना, आस्था र विश्वासलाई अझ दरिलो बनाउनु आज हामी सबैको साझा कर्तव्य हो । तसर्थ उक्त प्रतिवेदनको सुझाव कार्यान्वयन गर्ने सिलसिलामा चरणवद्ध रुपमा विभिन्न निर्णय एवं सुधारका कार्यक्रमहरू यथाशीघ्र थालनी गरिने छ । आफ्नो तहबाट अदालतको काम कारवाहीलाई विकृतिविहीन बनाई न्याय सम्पादनको पवित्र कार्यमा हरदम प्रयासरत् रहनु होला ।

7= प्रत्येक तहको अदालतमा कार्यरत् न्यायाधीश न्यायिक काम कारवाहीको सन्दर्भमा आफैमा एउटा नेतृत्वदायी व्यक्ति पनि हो । त्यसमा पनि पुनरावेदन अदालतको मुख्य न्यायाधीशले आफ्नो क्षेत्रभित्रका प्रत्येक अदालतहरूका न्यायिक र प्रशासनिक काम कारवाही एवं अर्द्धन्यायिक निकायहरूको न्यायिक कामकारवाहीका सम्बन्धमा नेतृत्वदायी भूमिका खेली मुद्दा मामिलाको योजनाबद्ध रुपले व्यवस्थापन गरी कानूनसम्मत निरोपण गराउने कार्यमा हरदम प्रयत्नशील रहनु पर्दछ । त्यसैले आफू र आफ्नो मातहतका अदालतको न्यायिक र प्रशासनिक कामकारवाही एवं अर्द्धन्यायिक निकायहरूको न्यायिक कामकारवाहीको नियमित अनुगमन गरी शीघ्र न्याय सम्पादन कार्य गर्नु गराउनु होला । साथै आफू मातहतका अर्द्धन्यायिक निकायबाट हुन न्याय सम्पादनसम्बन्धी कार्यको अनिवार्य रुपमा मासिक एवं वार्षिक प्रतिवेदन मगाई सर्वोच्च अदालत समेतमा पठाउने व्यवस्था गर्नु होला ।

8= हाम्रा कतिपय अदालतहरूमा अझै पनि मिसिल कागजातहरूको अभिलेख राख्ने पद्धतिमा एकरुपता एवं वैज्ञानिकता अपनाउन सकिएको छैन । छिनुवा मिसिल व्यवस्थापनको पुरातन ढाँचाबाट हामी मुक्त हुन सकेका छैनौं । अहिले भइरहेकै साधन, स्रोत र जनशक्तिलाई परिचालन र प्रयोग गरी यसमा सुधार ल्याउन नसकिने अवस्था भने छैन । त्यसैले अदालतका छिनुवा मिसिलहरूलाई फैसला मितिका आधारमा अभिलेखवद्ध गरी यथाशीघ्र व्यवस्थापन गर्नुका साथै विचाराधीन मुद्दाका मिसिलमा समेत मुद्दाको तथ्य, विवादित विषय, निर्णय गर्नुपर्ने प्रश्न, सम्वद्ध कानूनलगायतका आवश्यक कुराहरू समावेश गरी टिपोट गर्ने प्रणाली लागू गर्न सके मुद्दाको काम कारवाहीमा शीघ्रता आउने हुँदा त्यसतर्फ समेत विशेष ध्यान दिनु होला ।

9= अदालतबाट भएका फैसलाहरू समयमै कार्यान्वयन हुन नसके पक्षले न्याय पाएको अनुभूति गर्न पाउँदैन । फैसला कार्यान्वयनमा भएको ढिलासुस्तीका कारण समेत अदालतप्रतिको जनआस्थामा प्रतिकूल असर परिरहेको छ । त्यसैले न्याय क्षेत्र समन्वय समिति जस्ता संयन्त्रहरूलाई आफ्नो र मातहतका अदालतहरू समेतमा नियमित रुपमा सक्रिय गराई सम्बन्धित जिल्ला अदालतबाट फैसला कार्यान्वयनमा भएको प्रगतिको प्रत्येक महिना अनुगमन गरी रणनीतिक योजनाले लिएका लक्ष्यअनुरूप समयमै फैसला कार्यान्वयन गराउने तर्फ विशेष पहल गर्नु होला ।

10= अदालतमा उपलब्ध सीमित स्रोत र साधनको समुचित एवं मितव्ययितापूर्वक प्रयोग गरी न्याय सम्पादनमा लाग्नु पर्ने आवश्यकता छ । प्रत्येक न्यायाधीशलाई कानूनद्वारा नै छुट्टै व्यवस्था भइरहेको सन्दर्भमा अदालतका साधन र स्रोतको दुरुपयोग हुने गरेको भन्ने टीकाटिप्पणीलाई दोहोरिन नदिन कानूनबमोजिम प्राप्त सुविधा बाहेक अदालतलाई नै थप भार हुने किसिमले थप सुविधा प्रयोग गर्ने वा माग गर्ने परिपाटीलाई कुनै पनि हालतमा प्रश्रय नदिनु होला । त्यस्तो प्रवृत्तिको बारेमा नियमित अनुगमन गरी कडाईका साथ रोक लगाउनु होला ।

11= न्यायाधीशको आचरणका विषयलाई लिएर पनि टीकाटिप्पणी हुने गरेको पाइन्छ । यस्तो टीकाटिप्पणी र सोसम्बन्धी गुनासाहरू हाम्रो आचरणमा वाञ्छित सुधार ल्याउन नसकिएका कारणले समेत आउने गरेको हो । त्यसैले न्यायाधीश आचार संहिता, २०६५ को पूर्ण पालना एवं त्यसको अनुगमन समेत गर्नुपर्ने खाँचो छ । तसर्थ आफू र आफू मातहतका न्यायाधीशहरूबाट न्यायाधीश आचारसंहिता, २०६५ को पूर्ण पालना गरी गराई सदाचार कायम गर्ने गराउने र त्यसको नियमित प्रतिवेदन पेश गर्ने गर्नु होला ।

12= न्यायिक काम कारवाहीबाट अनुचित फाइदा लिई अदालतप्रति जनतामा नकारात्मक सन्देश प्रवाह गर्ने एवं वास्तविकतालाई ओझेलमा पारी पक्षलाई हैरानी दिने मानिसहरूको एउटा वर्ग सबै तहका अदालतहरूमा क्रियाशील रहेको तथ्य उजागर भएको छ । विचौलीयाको संज्ञा दिइएको उक्त वर्गले न्याय सम्पादनको कार्यलाई बीचैमा मोलतोल गरी पक्षलाई आर्थिक शोषण गर्ने र अदालत, न्यायाधीश र कर्मचारीलाई बदनाम गराउने जस्ता क्रियाकलाप गर्न सक्ने हुँदा त्यस्तो वर्गबाट न्याय सम्पादनको कार्यमा पर्न जाने प्रभाव वा असरप्रति समेत सचेत भई कार्य गर्नु गराउनु होला ।

13= न्यायाधीश र मुद्दाका पक्षहरू बीच फैसला गर्दाका वखत उचित संवाद वा जानकारी आदान प्रदान नहुँदा पनि न्याय सम्पादनको कार्यबाट सम्बन्धित पक्षले सन्तुष्टि प्राप्त गर्न नसकेको अवस्था छ । त्यसबाट हार्ने पक्षले अनावश्यक शंका गर्ने र न्यायाधीश र अदालतप्रति अनावश्यक टीकाटिप्पणी गर्ने सम्भावना रहन्छ । मुद्दामा निर्णय सुनाउँदाका अवस्थामा न्यायाधीशले इजलासबाट जित्ने पक्षलाई यो यस कारणले जितेको र हार्ने पक्षलाई यो यस कारणले हारेको भन्ने सम्बन्धमा सूचित गर्न सकेमा पनि अदालतबाट भएका फैसलाप्रतिको अनावश्यक टीकाटिप्पणी कम हुन सक्दछ । त्यसैले यसतर्फ विशेष ध्यान दिई न्याय निरोपण गर्ने गराउने गर्नु होला ।

14= न्यायपालिकाको काम कारवाहीका सम्बन्धमा भ्रामक एवं अल्पसूचित टीकाटिप्पणी तथा गलत समाचार संप्रेषणबाट न्यायपालिकामाथि नै नकारात्मक प्रभाव पर्न जान्छ । तसर्थ आफ्नो तहबाट भएका न्यायिक काम कारवाही एवं न्याय प्रशासनसम्बन्धी कार्यका विषयमा सही, यथार्थ र सत्य सूचना संप्रेषण गर्न आधिकारिक पदाधिकारी मार्फत् आधारयुक्त विश्वसनीय सूचनाहरू आदानप्रदानको व्यवस्था गर्नु होला ।

15= काबु बाहिरको परिस्थिति परेमा बाहेक आफू र आफ्नो मातहतका अदालतमा कार्यरत् न्यायाधीशहरूको विदा स्वीकृत गर्दा अदालतको न्याय सम्पादनको कार्यमा प्रतिकूल असर नपर्ने गरी मात्र विदा स्वीकृत गर्ने गराउने गर्नु होला ।

16= अदालतका सेवाग्राहीहरूसँग समय समयमा अन्तर्क्रिया वा छलफल गरी उनीहरूको गुनासो वा पीरमर्का सुन्ने व्यवस्था गर्नुका साथै अदालतका काम कारवाहीको सम्बन्धमा उठ्ने जनगुनासो वा उजूरीहरूको सुनुवाई गरी तत्कालै त्यस्ता गुनासो वा उजूरी समाधान गर्ने व्यवस्था मिलाउनु होला ।

17= मुद्दामा प्रमाण बुझिसकेपछि छिटो किनारा गरी शीघ्र न्याय प्रदान गर्नु पर्ने दायित्व अदालतको हो । यसको लागि इजलास एवं बहस व्यवस्थापनका माध्यमबाट पनि शीघ्रता प्रदान गर्न सकिन्छ । त्यसका साथै अनावश्यक रुपमा पेशी स्थगित गरी मुद्दाको कारवाही लम्ब्याउने प्रवृत्तिलाई निरुत्साहित गरी शीघ्र मुद्दा फछ्र्यौट गर्न सम्बन्धित बारसँग समन्वय गरी आवश्यक व्यवस्था मिलाउनु होला । स्थानीय बार एकाइ सँगको सहकार्यलाई समुचित महत्व दिँदै सुधारका कार्यमा कानून व्यवसायीहरू समेत सहभागी बनाउन विशेष ध्यान दिनु होला । साथै स्वच्छ पत्रकारिता सेवाग्राही र सेवाप्रदायकका बीचमा समस्यारहित सम्बन्ध विकसित गराउने कडी हो भन्ने तथ्यलाई मनन् गर्दै स्थानीय पत्रकारहरूसँग आवधिक अन्तर्क्रियामा जोड दिनु होला ।

18= न्याय सम्पादनको कार्यमा सहयोगीको रुपमा रहेका अदालत व्यवस्थापन समिति, बार र वेञ्चबीचको छलफल, न्याय क्षेत्र समन्वय समिति, कर्मचारीसँगको छलफल जस्ता संयन्त्रहरूलाई नियमित रुपमा संचालन र सक्रिय गराई न्यायिक काम कारवाहीमा समन्वय र सहयोग जुटाई कार्य सम्पादन गर्नु होला ।

19= मातहत कर्मचारीहरूको गुनासो सुनी उनीहरूको पीरमर्का समाधान गर्ने व्यवस्था गर्नुका साथै अदालत कार्य विवरण निर्देशिका, २०५७ तथा सम्बन्धित अदालतको नियमावलीमा व्यवस्था भएअनुरूप प्रत्येक कर्मचारीको काम, कर्तव्य र जिम्मेवारी किटान गरी कार्य सम्पादनस्तर र सेवाको गुणस्तरका आधारमा अनुगमन, नियन्त्रण र निरीक्षण गरी दण्ड र पुरष्कारलाई वस्तुनिष्ठ रुपमा क्रियान्वित गर्ने गर्नु होला ।

20= अदालतहरूमा वर्षेनी रुपमा बेरुजु बढ्दै गएको र त्यसको फछ्र्यौट गर्ने प्रवृत्तिमा उदासीनता रहेको पाईएको छ । त्यसैले आफू र आफू मातहतको अदालतहरूमा रहेको वेरुजु फछ्र्यौट गर्ने गराउने कार्य गरी आर्थिक अनुशासन कायम गर्नु गराउनु होला ।

21= पुनरावेदन अदालत नियमावली, २०४८ को नियम ३क. मा उल्लेख भएका विषयहरूलाई गंभीरतापूर्वक मनन गरी त्यस वमोजिमका विवरणहरू समावेश गरी समयमै त्यसको प्रतिवेदन पठाउने व्यवस्था गर्नु होला ।

22= यसभन्दा अगाडि प्रधान न्यायाधीशज्यूहरूबाट दिइएका निर्देशनहरूको पालना एवं कार्यान्वयनको सम्बन्धमा आफू र आफ्नो मातहतका अदालतहरूबाट भएको प्रगतिको समीक्षा गरी यथाशीघ्र प्रतिवेदन समेत पठाउनु होला ।

23= न्यायपालिकाले मेलमिलापलाई आफ्नो अभियानको रुपमा लिएको सन्दर्भमा आ-आफ्नो अदालत र मातहत जिल्ला अदालतमा मेलमिलापत्र केन्द्र स्थापना गरी मेलमिलाप समितिको सम्पर्क र समन्वयमा यो कार्यक्रमलाई प्रभावकारी रुपमा सञ्चालन गर्ने ।

24= देशका विभिन्न अदालतमा मुद्दा मुल्तवीको संख्या अपेक्षाकृत रुपमा बढी देखिएको हुँदा कानूनको परिधिभित्र रही तुरुन्त मुलतवी जगाई कार्य थालनी गर्ने र मुलतवी जगाई कारवाई शुरु गरेको तथ्याङ्कको जानकारी सर्वोच्च अदालतलाई गराउनु होला ।

**अन्त्यमा,** न्याय सम्पादनको क्षेत्रमा हुने सुधार वा विकास समेत एउटा नियमित प्रक्रिया हो । हाम्रो लगनशीलता, सक्षमता, इमान्दारी र पारदर्शिताबाटै न्याय सम्पादनको कार्यमा सुधार आउने हुँदा आफ्नो तहबाट यस पुनीत कार्यमा दत्तचित्त भई लागिरहनु हुनेछ भन्ने विश्वास लिएको छु ।

**धन्यवाद !**